श्री धनावंशी हित

धनावंशी चेतना की मासिक पत्रिका

वर्ष : 1 अंक : 5 मई 2020 मूल्य : 20 रु.

धनावंश की प्रगति में नारी शक्ति

स्त्री शक्ति और धनावंश समाज

धनावंश में नारी की भूमिका

समाज और स्त्रीत्व

श्री धनावंशी हित के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

श्री गोपालदासजी थावरिया
सामाजिक कार्यकर्ता
M.: 9982409182

महावीरप्रसाद
M.: 9414417182

कन्हैयालाल
M.: 9983573598

पवनकुमार
M.: 8949394249

अशोककुमार
M.: 9024613181

गोपालदास जनरल एण्ड क्लोथ स्टोर, थावरिया
श्रीराम कृषि सेवा केन्द्र, नोखा
जी.डी. पेट्रोलियम सर्विस, काकड़ा
जी.डी. गारमेन्ट्स, बालाजी मार्केट, नोखा

पावन सन्निधि
श्री ठाकुरजी महाराज
भक्त शिरोमणि श्री धनाजी महाराज

मानद परामर्श
परिव्राजक श्रीसीतारामदास स्वामी

सम्पादक एवं प्रकाशक
चेतन स्वामी

सहायक सम्पादक
प्रशांत कुमार स्वामी, फतेहपुर
श्रीधर स्वामी, सुजानगढ़
(अवैतनिक)

अकाउंट विवरण
Dhanavanshi Prakashan
A/c No. - 38917623537
Bank - State Bank of India
Branch - Sridungargarh
IFSC code - SBIN0031141

सम्पादकीय कार्यालय
श्री धनावंशी हित
धनावंशी प्रकाशन, कालूबास,
श्रीडूंगरगढ़-331803
(बीकानेर) राज.
M.: 9461037562
email:chetanswami57@gmail.com

सम्पादक प्रकाशक
चेतन स्वामी द्वारा प्रकाशित
तथा महर्षि प्रिण्टर्स, श्रीडूंगरगढ़
से मुद्रित।

पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के स्वयं के हैं। उनसे सम्पादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। रचना की मौलिकता व वैधता का दायित्व स्वयं लेखक का है, विवाद की स्थिति में न्यायक्षेत्र श्रीडूंगरगढ़ रहेगा।

मूल्य : एक प्रति 20/- रु.
वार्षिक 200/- रु.

श्री धनावंशी हित

धनावंशी चेतना की मासिक पत्रिका

वर्ष : 1 अंक : 5 मई 2020 मूल्य : 20/- रुपये

धनाजी महाराज की आरती

धनाजी थांरी आरती गावां जी।।
भगतांजी थांरी आरती गावां जी।।
आप बधायो मान भगति रो भगतां सिरै कैवाया जी।
ब्राह्मण दिन्हो एक सिला टुक आप जिमाया जी।।
भगति रै प्रताप धनोजी प्रभु संग पाया जी।
हाजर रहता-हेलो देंतां सब काम भोळाया जी।।
आन देव री राखै न आसा भजै ठाकुर सांसो सासा।
वैराग्यां री रीत बै जाणै भगत बणाया जी।।
सिंवरो राम साधपण सेवो उपदेस द्रिढाया जी।
खेती भगति साथ करो थे धनावंश उपाया जी।।
चित्त में थांनै राखै चेतन वैराग धरावो जी ।
धनावंश पर म्हैर करो थांरा जस गांवां जी।।
धनाजी थांरी आरती गावां जी।
भगतां जी थांरी आरती गावां जी ।।

अनुक्रमणिका

* सम्पादकीय-
धनावंश में नारी की स्थिति/04
* समाचार-/05-06
* आलेख-
धनावंश की प्रगति में नारी शक्ति/07
अपनत्व का दूसरा नाम शांतिदेवी स्वामी/09
विभिन्न क्षेत्र में सरकारी धनावंशी नारिया/10
धनावंश स्वामी और स्त्रीत्व/18
नारी तू नारायणी/20
स्त्री शक्ति और धनावंशी समाज/21
धनावंश में नारी की ताकत/23
धनावंश की उन्नति में नारी शक्ति की भूमिका/25
* विशद परिचर्चा
धनावंशी नारी के प्रश्न/13
* आपके पत्र आपकी भावनाएं/28

सम्पादकीय

धनावंश में नारी की स्थिति

हम धनावंशी जब सभी विषयों के सम्बन्ध में अपने विचार खुलकर प्रकट करते हैं तो हमारे समाज के आधे अंग यानि नारी समाज की वर्तमान स्थितियों पर भी विचार क्यों नहीं करें।

जब हम आप सभी विषयों पर चिंतन करते हैं तो धनावंश में स्त्रियों की स्थिति पर भी अवश्य ही बहुत कुछ सोचते होंगे?

धनावंश की उन्नति में नारी शक्ति की वही भूमिका है जो पुरूष वर्ग की है। फिर भी कुछ प्रश्न है जैसे धनावंश में नारी की स्थिति क्या है? उसको समाज में कैसा सम्मान प्राप्त है? धनावंशी नारी की शैक्षिक स्थिति कैसी है? समाज को धनावंशी नारी से किस तरह की अपेक्षाएं हैं? धनावंशी नारी की आध्यात्मिक धार्मिक स्थिति कैसी है? क्या धनावंशी नारी अपने अस्तित्व के प्रश्न को समझती है? क्या समाज में नारियों का संगठन होना चाहिए? धनावंश में नारी स्वातंत्र्य कैसा है? क्या धनावंशी नारी रुढिवादिता से प्रताड़ित है? नौकरी पेशा धनावंशी स्त्रियों की स्थिति कैसी है ? क्या धनावंश में परित्यक्ता/ छोडना यानि वैवाहिक सम्बन्ध विच्छेद जैसी समस्या किसी खराब स्तर पर पनप रही है ? अगर पनप रही है तो इसका निदान क्या हो? धनावंशी नारी की सांस्कृतिक समझ कैसी है?

ऐसे बहुत से सवाल हैं, जिन पर अब धनावंशी नारियों को भी विचार करना है और पुरूषों को भी। जो समाज अपने स्त्री वर्ग के सम्बन्ध में चिंतन करने से कतराता है, वह जल्द ही रूढियों का शिकार होकर पतित हो जाता है। समाज की संरक्षा और संवर्धन में दोनों का बराबर योगदान है तो एक की अवहेलना कर आगे कैसे बढा जा सकता है?

धनावंशी हित पत्रिका के इस अंक में हमने कुछ आलेख धनावंशी नारियों के सम्बन्ध में देने का यत्न किया है। धनावंशी नारियों से सम्बन्धित सामग्री हम आगे भी प्रकाशित करते रहेंगे।

कृपाकांक्षी
चेतन स्वामी

अनुरोध

हम धनावंशी ही रहना चाहते है

प्रिय धनावंशी बंधुओं
जरा गौर करें ।

कई जगहों से मेरे पास अनेक प्रकार के संदेश आते रहते हैं-उनमें अधिकतर दिग्भ्रमित करनेवाले होते हैं। कुछ वैष्णव संगठनों के लोग एकता के नाम पर एक सुहाना सा नारा देकर कहते हैं कि हम सब प्रकार के स्वामी वैष्णव ब्राह्मण हैं-इसलिए क्यों न एक ध्वज के नीचे आ जाएं। कुछ जाट संगठन यह चाहते हैं कि विश्नोई-जसनाथी और धनावंशी भी जाट महावर्ग में आ जाएं। उपरोक्त दोनों ही बातें धनावंश के लिए विनाशकारी हैं। न तो हम वैष्णव ब्राह्मण हैं और न हम आज की तारीख में जाट हैं। हम आज विशुद्ध रूप से धनावंशी स्वामी हैं और धनावंशी ही रहना चाहते हैं। धनाजी महाराज ने हमें जो पंथ प्रदान किया है। उस पर हम लगभग पांच शताब्दियों से निष्ठापूर्वक चल रहे हैं और चलते रहेंगे। हमें मजबूती चाहिए तो हमारी अपनी चाहिए। थोथे प्रलोभन से तो हमारा नुकसान होना है और किसी दूसरे का फायदा, इस बात के मर्म को हम जितना जल्दी जान लेते हैं-उतना ही फायदा है। हम में से कुछ लोग ब्राह्मण बनने के लिए बहुत अधिक उतावले हैं और इसके लिए वे जिंदा मक्खी निगलने के लिए तैयार बैठे हैं । सोचो-गंभीरता से विचार करो ।

जिन्दगी में अगर कुछ पाना हो तो तरीके बदलो-इरादे नहीं।

डॉ. स्वामी दे रहे हैं अमूल्य सेवा

बीकानेर। लूणकरणसर तहसील के छोटे से गांव खारी के साधारण किसान परिवार से निकलकर डॉक्टर बने रामप्रताप स्वामी मानव सेवा के लिए हमेशा आगे रहने वाले हैं जो कि अभी पी.बी.एम. हॉस्पिटल के मेडिसिन की वीसीएटी यूनिट में रेजिडेंट डॉक्टर है। ये अपनी ड्यूटी कोराना मरीजों की सेवा में बखूबी निभा रहे है। श्री अनिल पूनिया ने बताया कि वैश्विक महामारी कोरोना को मात देने वाले डॉ रामप्रताप स्वामी दिन रात अपनी ड्यूटी कोरोना मरीजों के लिए कर रहे है। अपनी जान की परवाह किये बगैर इन्होंने अपना तन मन कोरोना मरीजों को ठीक करने में लगा रखा है। कोरोना वॉरियर्स डॉ. स्वामी ने बताया कि जब तक कोरोना पूर्ण रूप से खत्म नहीं हो जाएगा वो अपनी ड्यूटी बखूबी निभाएंगे।

जी जान से सेवा कर रहे हैं कोरोना वारियर डॉ. जगदीश स्वामी

वैश्विक महामारी कोरोना की विकट परिस्थितियों में नोखा का एक होनहार डॉ अपनी सेवाएं दे रहा है कोरोना वॉरिअर के रूप में डॉ जगदीश स्वामी जो की वर्तमान में उदयपुर के मेडिकल कॉलेज से मेडीसिन डिपार्टमेंट से पीजी कर रहा हैं, पिछले एक माह से निरंतर कोरोना वार्ड में अपनी सेवाएं दे रहे है । डॉ जगदीश स्वामी के पिता डॉ घनश्यामदास स्वामी जो कि नोखा शहर में जनरल फिजिसियन के रूप में पिछले 25 साल से अपनी सेवाएं दे रहे हैं। डॉ जगदीश स्वामी मेडिकल कॉलेज के कोरोना एवम जनरल वार्ड में निरंतर मरीजों की जाँच एवम उपचार में अपनी सेवायें दे रहे हैं जहाँ उनको 8 घण्टे से ज्यादा पीपीई किट पहन कर रहना पड़ता है जिसके दौरान वो वार्ड छोड़ कर पानी पीने भी नही जा सकते है। डॉ जगदीश स्वामी कोरोना टाइम में अपने घर पर भी बहुत कम बात कर पाते है क्योंकि उनकी दिन और रात दोनों शिफ्ट में ड्यूटी रहती है।। देश सेवा का जज्बा दिखाते हुए ये कर्मवीर बिना थके कोरोना को हराने में अपना योगदान दे रहा है।

गोविन्द स्वामी ने तेलंगाना मुख्यमंत्री सहायता कोष में दिये 50 हजार रूपये

गोविन्द जी स्वामी सुपुत्र आशारामजी स्वामी निवासी-कानूता प्रवासी हैदराबाद ने कोरोना महामारी के दौरान मुख्यमंत्री सहायता कोष में 50000/=रुपये की राशि तेलंगाना के मुख्यमंत्री को समर्पित की है। राष्ट्र हित में किया गया उनका यह योगदान समाज के लिए गौरव का विषय है ।

मनुष्य के चरित्र से ज्ञात होता है कि वह किस प्रवृत्ति का है।

समाचार

मानव सेवा कर रहे हैं डॉ. मुरलीधर

गुसाइंसर बड़ा गांव के भंवरदास स्वामी के पुत्र डॉ मुरलीधर स्वामी जो कि बीकानेर के पी बी एम हॉस्पिटल में न्यूरो साइकेट्री विभाग में कार्यरत हैं और वर्तमान के इस कोरोना महामारी के दौर में डॉ मुरलीधर स्वामी कोरोना मरीजो के इलाज में अपना योगदान दे रहे है। कोरोना मरीजों को मानसिक रूप से स्वस्थ रखने के लिए डॉ स्वामी निरन्तर जिले के कोरोना क्वारंटीन सेन्टर पर जाकर कोरोना के संदिग्ध मरीजो की कॉउंसलिंग कर रहे हैं और उनको उपचार भी बता रहे हैं। डॉ एम डी स्वामी की पत्नी डॉ कौशल्या स्वामी भी पी बी एम हॉस्पिटल के चर्म रोग विभाग, बीकानेर में कार्यरत है और वो भी कोरोना रोगियों के उपचार में अपना योगदान दे रही हैं।

प्रति माह दस परिवारों को राशन दे रहे हैं ओमजी-श्यामजी

श्रीडूंगरगढ़ में श्री राधाकृष्ण मंदिर के पुजारी परिवार के अथक प्रयास से अभावग्रस्त परिवारों की सेवा के लिए गठित दीन बंधु सेवा दल ने कोरोना महामारी प्रारंभ होने से बहुत पहले से लोगों की सेवा प्रारंभ करदी। इस संस्था के अध्यक्ष डॉ पुरुषोत्तम स्वामी हैं। वे इसके निमित्त पूर्ण समर्पित हैं। अपनी ओर से पहल कर वे इस सेवा कार्य को करने में जुटे हुए हैं,वहीं उनके भ्राता नारायणदासजी तथा ओमप्रकाश स्वामी (सोमासर) लक्ष्मणदास स्वामी का हर माह सहयोग रहता है। भारती निकेतन स्कूल के ओमजी-श्यामजी की ओर से प्रति माह दस परिवारों को राशन सामग्री पहुंचाई जाती है। संस्था के सेवा कार्य सराहनीय हैं ।

धनावंशी स्वामी समाज ने दिये कोरोना सहायतार्थ 55 हजार रुपये

श्री धनावंशी स्वामी समाज समिति-नागौर ने विगत दिनों कोरोना महामारी सहायतार्थ मुख्यमंत्री सहायता कोष में 55000/=रुपयों की राशि प्रदान की। इसमें संस्था के अध्यक्ष देवादासजी बाकलिया,नंदकिशोर स्वामी राजोद,नरेन्द्र कुमार स्वामी जाखेड़ा,सत्यनारायण स्वामी लालावास, रामाकिशन स्वामी रूपाथल,राधेश्याम स्वामी नागौर, सुभाष चन्द्र स्वामी सीकर तथा प्रेमदास स्वामी बादेड़ का योगदान रहा । पचपन हजार रुपयों की राशि का चैक नागौर जिलाधीश के माध्यम से मुख्यमंत्री को भेजा गया ।

नगर सेवकों द्वारा भोजन सामग्री की 2280 किट बंटवाई

कोराना संक्रमण के हालातों के बीच अभावों और विकट हालातों से जूझ रहे हर वर्ग के लोगों के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों और दानदाताओं के साथ मिलकर सकारात्मक पहल की गयी। इस कड़ी में जालोर नगर के शहर सेवकों द्वारा जालोर नगर में व उसके आसपास 18 गांवों में बांटने के लिए भोजन सामग्री के 2280 किट सेवकों को दानदाताओं के सहयोग से उपलब्ध कराएं। इस कार्य में पालास (बीदासर) के मूल निवासी तथा जालोर में ग्रेनाइट व्यवसायी गोपाल दास स्वामी ने एक लाख ग्यारह हजार रुपये की राशि भेंट की। वे वर्तमान में जालोर नगर प्रभात भाग कार्यवाह के पद को भी सम्भाल रहे हैं। अभी उनके द्वारा एक काढा भी तैयार कर वितरित किया जा रहा है।

सम्बन्ध बड़े नहीं होते, उसे संभालने वाले बड़े होते है।

धनावंश की प्रगति में नारी शक्ति

सुमन स्वामी, अध्यापिका, पाली

स्त्री को सृजन की शक्ति माना जाता है। मानव जाति के अस्तित्व का आधार नारी है। नारी अपने हर रूप में पूजनीय है चाहे कन्या रूप हो, मां हो, बहन हो, पत्नी हो। परन्तु नारी जहां वर्तमान में अंतरिक्ष तक भी पहुंच गई है वहाँ हमारे धनावंशी समाज में अभी तक उसे वो सम्मान प्राप्त नहीं है जिनकी वो हकदार होती है। स्त्री-पुरुष जीवन रथ के दो पहिये होते है परन्तु स्त्री रूपी पहिये पर ज्यादा दबाव बना रहता है। आज तक समाज में ऐसा कहीं भी आयोजन नहीं जहां विशेषकर स्त्रियों के लिए कोई कार्यक्रम रखा गया हो। हमारे धनावंशी समाज में भी कई स्त्रियां बड़े पदों पर आसीन है, कई लड़किया डॉक्टर, इंजीनियर, वकील बन रही है परन्तु उनकी खुशियां उनके घर तक ही सीमित है। समाज को भी उन्हें सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करने में भूमिका निभानी चाहिए। अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर सम्पूर्ण भारत में कार्यक्रमों का आयोजन हुआ व महिलाओं को सम्मानित किया गया परन्तु हमारे समाज में जहां तक मेरी जानकारी में है ऐसा कहीं नहीं हुआ।

धनावंशी समाज में भी महिला प्रतिभाओं की कमी नहीं है, जरुरत केवल विकास की है। महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए समाज में उनके अधिकारों व मूल्यों को दबाने वाली सोच को मारना जरुरी है, जैसे दहेज प्रथा, अशिक्षा, असमानता, घरेलू हिंसा, मानसिक प्रताड़ना आदि।

भारत में अनपढ़ों की संख्या में महिलाएं सबसे अव्वल है, हमारे समाज में भी जो ग्रामीण इलाके हैं वहां यही स्थिति है। लड़कियों को शिक्षित कर कम से कम इतना काबिल बनाना चाहिए कि वे हर क्षेत्र में स्वतंत्र होकर फैसले कर सकें।

बात घूंघट रखने या हटाने की नहीं है होना केवल यह चाहिए कि नारी को अपनी बात कहने का पूरा हक मिले, उसे भी घर के बाकी सदस्यों के समान, सम्मान प्राप्त हो चाहे वह बहू हो या बेटी। पारिवारिक कार्यों में उसकी सलाह को सम्मान दिया जाए आदि।

समाज में कैसा सम्मान प्राप्त है-कई पढ़ी लिखी लड़कियां भी ससुराल जाकर घर में कैद होकर रह जाती है क्योंकि अपने धनावंशी समाज में आज भी कई लोगों की सोच है कि घर जाकर कमाने की आवश्यकता नहीं है या ये इनके सम्मान को ठेस पहुंचा सकता है। जबकि सक्षम नारी घर व बाहर दोनों जगह अपनी जिम्मेदारियां निभाने में सक्षम है। पर लोगों को लगता है लड़कियां या बहू पैसा कमाने का उद्देश्य रखती है, जबकि ऐसा नहीं होता नौकरीपेशा महिला स्वावलम्बी होती है। ये कुछ नया तो नहीं पहले भी महिलाएं खेती में सहायता कर अप्रत्यक्ष रूप से घर में आर्थिक सहयोग करती थी। अब अगर पढ़ी-लिखी बहू बाहर जाती है तो इसमें गलत क्या?

समाज में नारी से अपेक्षाएं-वर्तमान में समय तेजी से बदल रहा है, पहले बिना पढ़ी-लिखी स्त्री भी बच्चों को संस्कार देकर बड़ा कर देती थी परन्तु वर्तमान में बच्चों पर बचपन से ही घर व विद्यालय में सीखाने-सीखने पर इतना जोर होता है कि अगर स्त्री शिक्षित नहीं है तो वह बच्चे को संस्कारित शिक्षा तो देने में सक्षम रहेगी परन्तु जहां उसके साथ वाले दूसरे बच्चे खड़े होंगे वह बच्चा पीछे रह जायेगा। पढ़ी-लिखी शिक्षित मां बच्चों को भी आगे बढ़ाने में सहयोग देती है। समाज को उन नारियों की उन्नति में सहयोग देना चाहिए जिन्हें स्वास्थ्य, शिक्षा जैसी मूलभूत आवश्यकताएं भी प्राप्त नहीं है। हमारे समाज के अधिकांशत: लोग ग्रामीण

सलाह के सौ शब्द से ज्यादा, अनुभव की एक ठोकर इंसान को बहुत मजबूत बनाती है।

परिवेश से जुड़े है। ग्रामीण परिवेश से जुड़े हैं। महिलाएं भी अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार से जुड़ी होती है परन्तु उन्हें वो सम्मान प्राप्त नहीं है। चाहे वो कृषि हो या दुग्ध उत्पादन महिलाएं घर में आर्थिक सहयोग कर रही हैं।

कई धनावंशी नारियां आगे बढ़ना चाहती है परन्तु सामाजिक बंधन के नाम पर उनकी इच्छाओं का दमन कर दिया जाता है। सिर्फ 2 प्रतिशत नारियां ही ऐसी होती हैं जो हर स्थिति में मजबूत रहती है बाकि धीरे-धीरे अपना अस्तित्व को घर में बंद कर देती है। नारी अपने अस्तित्व को समझती तो है परन्तु उन्हें बचपन से जो संस्कार मिलते है ससुराल में बड़े बुजुर्गों की हर बात का सम्मान करना, अपनी इच्छाओं को पूरा करने से पहले उनके सपनों को पूरा करना, उन लोगों को अपना पूरा समय देना, समय पर जिम्मेदारियां निभाने, इन सभी को पूरा करते-करते वह अपना अस्तित्व ही भूल जाती है।

नारियों का संगठन-धनावंशी समाज में भी नारियों का संगठन होना चाहिए क्योंकि नारी से सम्बन्धित जो समस्याएं समाज में है वे केवल व्यवहारिक रूप में नारी ही जान सकती है व उनमें उपयुक्त समाधान भी वहीं बता सकती है, क्योंकि उसने स्वयं ने उन समस्याओं को सहा है। जब देश की आधी आबादी महिलाओं की है तो संगठन भी होने अपेक्षित है। अन्यथा ये आधी आबादी मजबूत कैसे होगी?

ऐसा संगठन हो जिनमें महिलाओं से जुड़े हर पहलू पर विचार विमर्श हो, महिलाओं को भी सांस्कृतिक, मनोरंजन हेतु मंच प्राप्त होना चाहिए। मेरी दृष्टि में हमारा समाज आज भी उन पिछड़े समाजों की गिनती में आता है जहां बालिका पैदा होने पर अफसोस जताया जाता है व कहा जाता है- तेरी जगह छोरा हो जाता तो पूरे गाँव में मिठाई बंटवाती। अगर ये भेदभाव समय पर समाप्त नहीं हुआ तो आने वाले समय में हम बहुत पीछे रह जायेंगे। कन्या पूजन केवल नवरात्र में होना ढोंग मात्र है अन्यथा सदैव कन्या का सम्मान हो ताकि हर दिन नवरात्र के समान पूजनीय हो।

नारी स्वातंत्र्य कैसा हो-नारी की स्वतंत्रता आधुनिकता नहीं है। मेरा व्यक्तिगत मानना है कि वर्तमान में जिस प्रकार की आधुनिकता बढ़ रही है उसे नारी स्वतंत्रता नहीं कहा जा सकता है। बात घूंघट रखने या हटाने की नहीं है होना केवल यह चाहिए कि नारी को अपनी बात कहने का पूरा हक मिले, उसे भी घर के बाकी सदस्यों के समान, सम्मान प्राप्त हो चाहे वह बहू हो या बेटी। पारिवारिक कार्यों में उसकी सलाह को सम्मान दिया जाए आदि। आधुनिकता में पहनावे को लेकर मेरे विचार न ही पक्ष में है न ही विपक्ष में, क्योंकि ये पारिवारिक मामला है। नारी स्वातंत्र्य का वास्तविक अर्थ उसे प्राप्त हो रहे सम्मान से है। धनावंशी समाज में नारी अधिकांशत: रुढ़िवादिता से प्रताड़ित है। पुरानी परम्पराओं का हवाला देकर हर जगह उन्हें दबाया जाना गलत है। होना यह चाहिए कि बहू को भी बेटी के समान उन्नति के अवसर प्राप्त हो। जो हमारी बेटी के लिए होता है वही सोच बहू के लिए भी हो। अगर एक नारी 20 साल साथ रहे मां-पिता, भाई-बहन अपना पूरा परिवार छोड़कर नया परिवार अपनाती है तो उस स्थिति में परिवार को भी चाहिए कि उसे अपने परिवार में सम्मानीय स्थान प्रदान करें। नौकरी पेशा धनावंशी स्त्रियों के बारे में लोगों की सोच यही रहती है कि ये सामाजिक कर्त्तव्यों का निर्वहन कैसे करेगी? कैसे सारे कर्त्तव्य पूरे करेगी, कैसे अपनी जिम्मेदारियां पूरी करेगी। ये सोच बदलनी होगी क्योंकि जब नारी नौकरी हेतु जाती है या तैयारी करती है तब उसे पता है कि भविष्य में ये सभी समस्याएं उसके सामने आयेगी, उन सभी के लिए वह मानसिक रुप से तैयार रहती है, और अगर समाज व परिवार का पूरा सहयोग उसे प्राप्त हो तो इन समस्याओं का सामना करना उसके लिए आसान हो जाता है।

अंत में मेरे विचार हैं कि महिलाएं ज्यादा खुले दिमाग की होती है, वर्तमान में अपने अधिकारों को पाने के लिए सामाजिक बंधनों को तोड़ रही है। क्यों न उन्हें पहले ही आगे बढ़कर अवसर प्रदान किये जाये ताकि वे समाज के किसी भी विचार को बंधन माने ही नहीं। शिक्षा व विकास के अवसरों में लड़की व लड़के दोनों को आगे बढ़ने के समान अवसर प्राप्त होते हैं।

***

अच्छा स्वास्थ्य और अच्छी समझ सबसे बड़ा धन है।
आप अपना और अपने परिवार का ध्यान रखें।

अपनत्व का दूसरा नाम शांतिदेवी स्वामी

● व्यक्तित्व आलेख

सीता स्वामी
अहमदाबाद

घर के कार्य करने के साथ-साथ मानादेवी ने अपना शिक्षण कार्य पूर्ण किया। घर में सभी का भरण-पोषण करना अब मानादेवी के बाद शांतिदेवी की ही जिम्मेदारी थी, क्योंकि गीगदासजी अपने साधु स्वभाव के कारण परिवार के लोगों का भरण-पोषण करने में असमर्थ थे। वे अपने जीवन में गौ-सेवा का कार्य करते थे तथा गौ सेवा वो बहुत तन-मन से करते थे। गौ-सेवा के अलावे वे गांव में वट और पीपल के वृक्ष लगाने का पुण्य कार्य किया करते थे।

वैसे तो हमारे समाज की नारी का मूल मंत्र परम्परागत पारिवारिक सीमा के इर्द-गिर्द ही रहता है। लेकिन अनेक महिलाओं ने उच्च शिक्षा ग्रहण कर एवं अनेक ने सामाजिक दायरे में रहकर हमारे समाज का नाम रोशन किया। धनावंशी नारीत्व ने स्त्री शक्तित्व को विभूषित किया है। देश व समाज में इनका सहयोग भी अतुलनीय है। इसी संदर्भ में मैं आज ऐसी ही नारी शक्ति का परिचय आपसे करवाना चाहती हूँ। जिन्होंने अपनत्व व ममत्व के स्वभाव से हमारे नारित्व को प्रखर किया है। उस नारी शक्ति का नाम स्व. शांतिदेवी स्वामी है।

शांतिदेवी का जन्म स्थान पाकिस्तान बताया जाता है। फिर जब भारत-पाकिस्तान का विभाजन हुआ तब उनके माता-पिता भारत आये और राजस्थान के राजगढ़ (सादुलपुर) शहर में आकर बस गये थे। उनके पिताजी का नाम बालदास व माता का नाम जसवीर कौर था। चार भाई-बहन मामराज, मदनलाल, मनोहर और बहन कृष्णादेवी। बचपन में शांतिदेवी का स्वभाव चंचल ही था। शांतिदेवी बारह तेरह साल की थी तभी उनका विवाह हो गया था। छापर के गीगदासजी से शांतिदेवी का विवाह सम्पन्न हुआ। गीगदास का विवाह शांतिदेवी से गीगदास की बड़ी बहिन मानादेवी द्वारा तय किया गया था जो कि एक अध्यापिका थी। शांतिदेवी से गीगदासजी का दूसरा विवाह था। गीगदासजी की पहली पत्नी जेगणियां गांव की थी और विवाह के कुछ समय के उपरांत किसी कारणवश उनका देहान्त हो गया था। तत्पश्चात शांतिदेवी से उनका विवाह करवाया गया। शांतिदेवी की विवाहोपरान्त कहानी संघर्ष भरी रही थी। उन्होंने अपने विवाह के कुछ वर्ष बाद पढ़ना आरम्भ कर दिया था। उनको पढ़ाने का कार्य उनकी ननद मानादेवी ने किया था जो कि एक सरकारी अध्यापिका थी और अपने सारे परिवार को सम्भालती थी तथा साथ ही शांतिदेवी को शिक्षित करने का कार्य भी किया। घर के कार्य करने के साथ-साथ शांतिदेवी ने अपना शिक्षण कार्य पूर्ण किया। घर में सभी का भरण-पोषण करना अब मानादेवी के बाद शांतिदेवी की ही जिम्मेदारी थी, क्योंकि गीगदासजी अपने साधु स्वभाव के कारण परिवार के लोगों का भरण-पोषण करने में असमर्थ थे। वे अपने जीवन में गौ-सेवा का कार्य करते थे तथा गौ सेवा वो बहुत तन-मन से करते थे। गौ-सेवा के अलावा वे गांव में वट और पीपल के वृक्ष लगाने का पुण्य कार्य किया करते थे। परिवार की देखरेख शांतिदेवी करती थी। शांतिदेवी ने मानादेवी द्वारा माध्यमिक स्तर की शिक्षा प्राप्त कर ली थी। अपनी मेहनत और लगन से वो सरकारी स्कूल में अध्यापिका का भार संभालने लगी और छापर की उच्च प्राथमिक बालिका विद्यालय में शिक्षिका के रूप में कार्यभार सम्भाला। उनकी शिक्षा देने और पढ़ाने से सभी छापरवासी बहुत खुश थे। सभी ग्रामवासियों ने उनको कई बार सम्मानित भी किया। उन्होंने गांव की बालिकाओं को शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रेरित भी किया।

शांतिदेवी का स्वभाव एवं व्यक्तित्व मिलनसार, उदारमना एवं शांत और आदरभाव वाला था। उनको झूठ बोलना पसंद नहीं था। शांतिदेवी हमेशा सत्य का साथ देने वाली औरत थी। चाहे कोई भी हो वो झूठी बात पर उसका साथ नहीं देती थी। उनको अपने सभी कार्य समय पर पूरा करना पसंद था एवं सभी को स्वालम्बन के लिए प्रेरित करती। वे किसी के साथ भी भेदभाव वाला स्वभाव नहीं रखती थी। सभी के साथ प्रेमभाव, अपनत्व रखती थी। वह व्यवहार की बहुत ही कुशल नारी थी।

शांतिदेवी आगे जाकर सन् 2000 में छापर नगरपालिका अध्यक्ष के रूप पदस्थ हुई। उनका जीवन हमें प्रेरणा देता है कि पारिवारिक परिसीमा में रहकर भी हम परिवार व समाज के लिए उत्कृष्ट आयाम स्थापित कर सकते है। नारी शक्ति अपने अन्दर बहुआयामी शक्तियों का समागम लिए होती है।

**आप चाहकर भी अपने प्रति लोगों की धारणा नहीं बदल सकते,
इसलिए सुकून से अपनी जिंदगी जिए और खुश रहे।**

विभिन्न क्षेत्र में सरकारी धनावंशी नारियां

नाम	पिता/पति का नाम	गांव/शहर	पद
मधु स्वामी	सुपुत्री रामप्रताप स्वामी	झूमियांवाली	स्कूल व्याख्याता
स्नेहा स्वामी	सुपुत्री रामप्रताप स्वामी	झूमियांवाली	स्कूल व्याख्याता
अरुणा स्वामी	सुपुत्री रामप्रताप स्वामी	झूमियांवाली	स्कूल व्याख्याता
मंजू स्वामी	सुपुत्री रामप्रताप स्वामी	झूमियांवाली	वरिष्ठ अध्यापिका
कल्पना स्वामी	सुपुत्री राय साहब स्वामी	नेतेवाला	वरिष्ठ अध्यापिका
अरुणा स्वामी	सुपुत्री कृष्णदास स्वामी	मक्कासर	स्कूल व्याख्याता
कविता स्वामी	सुपुत्री सुभाष स्वामी	जीवनगर, रावतसर	स्कूल व्याख्याता
सुमन स्वामी	धर्मपत्नी दीपेन्द्र स्वामी	रावतसर	अध्यापिका
सावित्री स्वामी	धर्मपत्नी राजेन्द्र स्वामी	रावतसर	अध्यापिका
कलावती स्वामी	धर्मपत्नी जयसिंह स्वामी	रावतसर	अध्यापिका
सरोज स्वामी	धर्मपत्नी विनोद स्वामी	रावतसर	स्कूल व्याख्याता
डिम्पल स्वामी	मुकेश स्वामी	सात्यूं	वरिष्ठ अध्यापिका
अनिला स्वामी	सुपुत्री काशीराम स्वामी	सात्यूं	वरिष्ठ अध्यापिका
प्रियंका स्वामी	सुपुत्री टीकूराम स्वामी	रावतसर	विषय विशेषज्ञ कृषि
कविता स्वामी	सुपुत्री अमीचन्द स्वामी	सात्यूं	वरिष्ठ अध्यापिका
सावित्री स्वामी	धर्मपत्नी प्रमोद स्वामी	रावतसर	जी.एन.एम.
मीनाक्षी स्वामी	धर्मपत्नी नरेश स्वामी	तारानगर	अध्यापिका
सुभांशी स्वामी	धर्मपत्नी सुनील स्वामी	तारानगर	क.लि. स्वायत्त शासन
प्रमिला स्वामी	सुपुत्री जगदीश स्वामी	भूकरका	स्कूल व्याख्याता
सरोज स्वामी	धर्मपत्नी संजय स्वामी	भूकरका	जी.एन.एम.
राजश्री स्वामी	धर्मपत्नी संदीप स्वामी	जयपुर	कॉलेज व्याख्याता
प्रज्ञा स्वामी	धर्मपत्नी कपिल स्वामी	झूमियांवाली	बैंक क्लर्क
प्रियंका स्वामी	सुपुत्री आनंद कुमार स्वामी	नगराना	वरिष्ठ अध्यापिका
मंजू स्वामी	धर्मपत्नी चन्द्रपाल मूंड	झूमियांवाली	जेल प्रहरी
प्रजीत स्वामी	धर्मपत्नी जयप्रकाश स्वामी	रावतसर	अध्यापिका
आरती स्वामी	धर्मपत्नी पवन स्वामी	घौटाला	अध्यापिका
सरोज स्वामी	धर्मपत्नी पंकज स्वामी	रसालिया	अध्यापिका
ललिता स्वामी	सुपुत्री चुन्नीलाल स्वामी	नेठराना	डॉक्टर

ख्वाहिसों के दाम ज्यादा हो सकते हैं, मगर खुशियां हरगिज महंगी नहीं होती।

नाम	पिता/पति का नाम	गांव/शहर	पद
रीतू स्वामी	धर्मपत्नी नरेशकुमार स्वामी	रावतसर	अध्यापिका
चन्द्रकला स्वामी	धर्मपत्नी सुरेश स्वामी	नेठराना	अध्यापिका
मंजू स्वामी	धर्मपत्नी कृष्ण स्वामी	नेठराना	अध्यापिका
संध्या स्वामी	धर्मपत्नी सुभराम स्वामी	न्यांगली	अध्यापिका
कौशल्या स्वामी	धर्मपत्नी सुनील कुमार स्वामी	चक न्यांगल	व. अध्यापिका संस्कृत
निर्मल स्वामी	धर्मपत्नी अनिल स्वामी	धोलिया	पुलिस कॉंस्टेबल
पुष्पादेवी स्वामी	धर्मपत्नी प्रहलाद स्वामी	धोलिया	पुलिस कॉंस्टेबल
संगीता स्वामी	धर्मपत्नी गणपत स्वामी	धोलिया	पुलिस कॉंस्टेबल
निर्मला स्वामी	धर्मपत्नी जयचंद स्वामी	धोलिया	तृतीय श्रेणी अध्यापिका
शर्मिला स्वामी	धर्मपत्नी हरिदास स्वामी	कल्याणसर	तृतीय श्रेणी अध्यापिका
भाग्यश्री स्वामी	धर्मपत्नी लालदास स्वामी	कल्याणसर	तृतीय श्रेणी अध्यापिका
सीमा स्वामी	धर्मपत्नी महावीर स्वामी	जायल	तृतीय श्रेणी अध्यापिका
सरोज स्वामी	धर्मपत्नी ओमप्रकाश स्वामी	रातंगा	ए.एन.एम.
राजू स्वामी	धर्मपत्नी अशोक स्वामी	बोडिंग खुर्द	ए.एन.एम.
शारदा स्वामी	धर्मपत्नी जयप्रकाश स्वामी	बोडिंग खुर्द	अध्यापिका
रुपा स्वामी	धर्मपत्नी सुरेन्द्र स्वामी	खोड़वा	वरिष्ठ अध्यापिका
संतोष स्वामी	धर्मपत्नी प्रेमदास स्वामी	गंठिया	अध्यापिका
निर्मला भास्कर	धर्मपत्नी अशोक भास्कर	दूजार	वि. विद्यालय व्याख्याता
निरमा स्वामी	धर्मपत्नी लिखमाराम स्वामी	फरदौड़	अध्यापिका
सुशीला स्वामी	धर्मपत्नी सुरेश स्वामी	फरदौड़	अध्यापिका
सरिता स्वामी	धर्मपत्नी रजनीश स्वामी	जाखेड़ा	जू. टेक्नीशियन
गायत्री स्वामी	धर्मपत्नी अनुज स्वामी	जोधपुर	आयुर्वेद चिकित्सक
मुन्नी स्वामी	धर्मपत्नी मलादास स्वामी	रिंगण	राजस्थान पुलिस
उषा स्वामी	धर्मपत्नी श्याम स्वामी	नीमड़ा	स्कूल व्याख्याता
पूजा स्वामी	धर्मपत्नी दिनेश स्वामी	गोराऊ	जूनियर एकाउंटेट
मनफूल स्वामी	सुपुत्री शंकरलाल स्वामी	रुपाथल	तृतीय श्रेणी अध्यापिका
निर्मला स्वामी	सुपुत्री रघुवीर स्वामी	रुपाथल	वेटनरी कम्पाउंडर
सुमित्रा स्वामी	सुपुत्री रामनिवास स्वामी	रुपाथल	ए.एन.एम.
पूजा स्वामी	धर्मपत्नी बाबूलाल स्वामी	गोटण	राजस्थान पुलिस
उमादेवी स्वामी	धर्मपत्नी सुखराम स्वामी	तिपनी	आंगनबाड़ी
सुमनदेवी स्वामी	धर्मपत्नी ओमप्रकाश स्वामी	पावटा	आंगनबाड़ी
मुन्नीदेवी स्वामी	धर्मपत्नी सतीश स्वामी	कसूम्बी	तृतीय श्रेणी अध्यापिका
गीता स्वामी	धर्मपत्नी नन्दकिशोर स्वामी	भीड़यासर	पी.टी.आई.
उषा स्वामी	धर्मपत्नी महेशकुमार स्वामी	बीकानेर	तृतीय श्रेणी अध्यापिका
छोटीदेवी स्वामी	धर्मपत्नी रामप्रसाद स्वामी	खोड़वा	ए.एन.एम.

रिश्ते हो या बर्फ दोनों को बनाने और बनाये रखने के लिए ठण्ड रखनी बहुत जरुरी है।

नाम	पिता/पति का नाम	गांव/शहर	पद
भंवरीदेवी स्वामी	धर्मपत्नी दयाराम स्वामी	खोड़वा	आंगनबाड़ी
पिंकी स्वामी	धर्मपत्नी स्व. जगदीश स्वामी	गुसांईबर बड़ा	कनिष्ठ लिपिक
तारा स्वामी	धर्मपत्नी रामावतार स्वामी	शोभासर	तृतीय श्रेणी अध्यापिका
कौशल्या स्वामी	सुपुत्री बाबूलाल स्वामी	शोभासर	तृतीय श्रेणी अध्यापिका
विजयलक्ष्मी स्वामी	धर्मपत्नी रामकिशन मुंडेल	पण्डवाला	ए.एन.एम.
प्रियंका स्वामी	सुपुत्री बालकिशन खदाव	नागलवास	तृतीय श्रेणी अध्यापिका
विजयलक्ष्मी स्वामी	धर्मपत्नी भींवदास स्वामी	डीडवाना	वरिष्ठ अध्यापिका
नमिता स्वामी	सुपुत्री रामकरण स्वामी	पावटा, कोटपुतली	वरिष्ठ अध्यापिका
सुनीता स्वामी	सुपुत्री रामकरण स्वामी	पावटा, कोटपुतली	वरिष्ठ अध्यापिका
ममता स्वामी	धर्मपत्नी धर्मेन्द्र स्वामी	भूरी भड़ाज	दिल्ली पुलिस
मंजू स्वामी	धर्मपत्नी लीलाराम स्वामी	भूरी भड़ाज	अध्यापिका
विद्या स्वामी	सुपुत्री सांवरमल स्वामी	दौलतपुरा	वरिष्ठ अध्यापिका
शारदा स्वामी	सुपुत्री बीरबल स्वामी	अजीतगढ़	नर्स
सुमेश स्वामी	सुपुत्री महावीर स्वामी	दौलतपुरा	कनिष्ठ लिपिक
मंजू स्वामी	धर्मपत्नी कमलेश स्वामी	कोथल	अध्यापिका
दीपा स्वामी	धर्मपत्नी एन. के. स्वामी	बाड़मेर	वरिष्ठ अध्यापिका
सुमन स्वामी	धर्मपत्नी नारायण स्वामी	गुसांईसर	वरिष्ठ अध्यापिका
सुमन स्वामी	धर्मपत्नी छगन स्वामी	पाली	अध्यापिका
डॉ. अदिती स्वामी	धर्मपत्नी डॉ. महेन्द्र स्वामी	अजीतगढ़	चिकित्सा अधिकारी
बबीता स्वामी	सुपुत्र भंवरलाल स्वामी	बीकानेर	स्कूल व्याख्याता
कविता स्वामी	धर्मपत्नी महेश स्वामी	पाली	तृतीय श्रेणी अध्यापिका
माधुरी स्वामी	सुपुत्री स्व. शंकरदास स्वामी	लालगढ़	अध्यापिका
रेणुका स्वामी	सुपुत्री स्व. शंकरदास स्वामी	लालगढ़	पोस्टल सहायक
विजयलक्ष्मी स्वामी	धर्मपत्नी भरतकुमार स्वामी	सुजानगढ़	द्वितीय श्रेणी अध्यापिका
ममता स्वामी	धर्मपत्नी राकेश स्वामी	कल्याणसर	अध्यापिका
भाग्यश्री स्वामी	धर्मपत्नी लालदास स्वामी	खाटू बड़ी	अध्यापिका
सरोज स्वामी	सत्यनारायण स्वामी	सुजानगढ़	जी.एन.एम.
अनिता स्वामी	प्रेमप्रकाश स्वामी	डीडवाना	तृतीय श्रेणी अध्यापिका
राधा स्वामी	मेघराज स्वामी	पायली	ए.एन.एम.
मुन्नीदेवी	मंगलदास स्वामी	सारंगसर	तृतीय श्रेणी अध्यापिका
रेणू स्वामी	डॉ. विनोद स्वामी	चूरू	तृतीय श्रेणी अध्यापिका
हेमलता स्वामी	गीतेश स्वामी	चूरू	कमर्शियल सहायक
रीना स्वामी	लोकश स्वामी	चूरू	तृतीय श्रेणी अध्यापिका
स्वाति स्वामी	मनीष स्वामी	नोहर	पी.जी.टी.के.वी.

जिन्दगी संवारने को तो जिन्दगी पड़ी है, अभी बस वो लम्हा सम्भाल लो, जहाँ जिन्दगी खड़ी है।

धनावंशी नारी के प्रश्न

विशद परिचर्चा

इस महत्त्वपूर्ण परिचर्चा में हमने नीचे लिखे प्रश्न कतिपय धनावंशी महिलाओं से पूछे। बड़े उत्साह से उन्होने इनके प्रत्युत्तर प्रदान किये। जिन्हें आगे पढ़ें।

1. धनावंशी स्वामी समाज की समस्त प्रगति में नारी जाति क्या चाहकर भी अपना पूरा योगदान दे नहीं पाती है?
2. आपकी राय में धनावंशी नारी उन्नति में क्या क्या चीजें प्राथमिकता से होनी चाहिए?
3. धनावंश में नारी सम्मुख कौन-कौनसी समस्याएं हैं व उपाय?
4. क्या धनावंशी समाज में महिला संगठनों की आवश्यकता है? अगर है तो कैसे बने और क्रियान्वित किया जाये?

सुमन स्वामी, पाली अध्यापिका के विचार

1. समाज की पहचान नाम नहीं जनशक्ति से होती है कि उस समाज में लोगों के विचार कैसे है। जनशक्ति है कि उस समाज में लोगों के विचार कैसे है। जनशक्ति से मेरा तात्पर्य पुरुष के साथ नारी से है। परन्तु यह एक कटु सत्य है कहने में तो सभी समर्थन देते है कि स्त्री पुरुष सभी समान रूप से सम्मान के पात्र होते हैं, परन्तु व्यावहारिकता से हम सभी वाकिफ है। नारी चाहकर भी अपने स्वतंत्र विचार सभी के सामने प्रकट नहीं कर पाती। कारण स्पष्ट है कि उस पर कई प्रकार के सामाजिक बंधन होते हैं, स्त्री के बोलने, सोचने, विचार करने, पहनावे सभी पर दूसरों का अधिकार ज्यादा होता है। मेरे ये विचार किसी व्यक्ति विशेष को लेकर नहीं बल्कि उस वातावरण की उपज है जो हम अपने चारों ओर देखते हैं। नारी को घर के प्रत्येक सदस्य से लेकर मौहल्ले, समाज सभी के बारे में ध्यान रखना पड़ता है कि कोई उसके विचारों को अन्यथा ले लेगा या उसके बारे में गलत धारणा बना लेगा। उसे ध्यान रखना पड़ता है कि उसके विचारों व कार्यों से उसके परिवार की प्रतिष्ठा कम न हो जाए। अत: चाहकर भी नारी वह सम्मान नहीं प्राप्त कर पाती जिसकी हकदार होती है।
2. मेरे विचार में नारी की उन्नति उसके परिवार से ही प्रारम्भ होती है। इसमें भी ससुराल पक्ष इसके लिए ज्यादा उत्तरदायी होता है। एक पिता अपनी पुत्री को अच्छी शिक्षा दिला सकता है परन्तु विवाह उपरान्त अगर उसे आगे बढ़ने के अवसर प्राप्त नहीं हुए तो उस शिक्षा का क्या औचित्य। पढ़ी लिखी आत्मस्वाभिमान युक्त सुसंस्कारित नारी

ईश्वर का मानव जाति को सुन्दर संदेश-आप पृथ्वी पर मेहमान हो, मालिक नहीं।

यही चीज अपनी आने वाली संतान में प्रत्यारोपित कर सकती है जो कि हमारे समाज के आधार स्तम्भ है। वैसे तो आजकल कई पढ़ी–लिखी लड़कियां अच्छी शिक्षा के दम पर हमारे समाज का नाम रोशन कर रही है परन्तु अभी भी गांवों में कई स्थानों पर अशिक्षा है। नौकरी करना ही शिक्षा की पूर्ति नहीं है, शिक्षित होने पर वह नारी आत्मविश्वास से पूर्ण होती है, अपनी संतानों को अच्छी शिक्षा दे सकती है। ये सभी अप्रत्यक्ष रूप से समाज की उन्नति में योगदान ही है। साथ ही नारी वर्ग को आगे बढ़ने हेतु एक मंच प्राप्त होना चाहिए। मेरी दृष्टि में छात्राओं हेतु अलग से छात्रावास हो जहां पर अपने को सुरक्षित समझें। रुढ़िवादिता से नारी वर्ग को बाहर निकालना अत्यावश्यक है ये कार्य स्त्री नहीं बल्कि पुरुष को करना चाहिए क्योंकि अगर स्वयं प्रयास करेगी तो लोग उसका विरोध कर मार्ग में बाधा डालेंगे परन्तु अगर पुरुष अपने परिवार की स्त्रियों को आगे बढ़ाने में स्वयं योगदान देने आगे आयेंगे तो यह समाज के अन्य परिवारों में भी प्रेरणा का कार्य होगा।

3. शिक्षा के स्तर में सुधार अपेक्षित है। नारी व नर दोनों को समान सम्मान प्राप्त हो। परम्पराओं के पालन के साथ गलत कई कुरुतियां हमारे समाज में है उन्हें दूर करना जैसे कई लोग मानते है घूंघट प्रथा कुरूति है, कई लोग मानते है इसका कोई औचित्य नहीं, बात घूंघट होने या न होने की नहीं होनी चाहिए बल्कि केवल इतना हो जाये कि नारी को भी अपनी बात स्वतंत्र रूप से कहने का पूरा हक हो। उसे घर के बाकी सदस्यों के समान सम्मान प्राप्त हो, चाहे बहू हो या बेटी, पारिवारिक कार्यों में उसकी भी सलाह को सम्मान मिले।

4. संगठन कार्यों की सफलता को प्रदर्शित करता है। यह एक अवसर प्राप्त होता है। नारी वर्ग में जो समस्याएं है वे महिला संगठनों में ही दूर हो सकती है क्योंकि नारी ही दूसरी नारी की समस्या को व्यावहारिक रूप में समझ सकती है। महिला संगठन ऐसा हो जहां महिला से जुड़े हर पहलू पर विचार हो, नारी को भी सामाजिक, सांस्कृतिक विकास का एक मंच प्राप्त हो। जहां नारी को विचार प्रकट करने की स्वतंत्रता मिलती हो वहां समाज का दायित्व है कि वह समाज उसे एक मंच भी दे जहां उसके विचारों का प्रस्तुतीकरण हो। जहां हम देखते है कि समाज में पुरुषों में इन संगठनों के माध्यम से सम्पर्क बढ़ा है, वे एक दूसरे को जानने लगे है उसी प्रकार अगर महिला संगठन होगा तो सभी महिलाओं को भी समाज की अन्य महिलाओं से सम्पर्क करने का अवसर प्राप्त होगा साथ ही वह भी अन्यों की भांति समाज की उन्नति में अपना योगदान देगी।

मेरा सभी को नमस्कार व अगर मेरे विचार किसी को अच्छे न लगे तो क्षमा प्रदान करें। ये मेरे व्यक्तिगत विचार है व साथ ही मेरी इच्छा है कि हमारे समाज में कन्या जन्म पर घर पर यह न सुनना पड़े कि काश छोरा हो जाता। हमें यह सुनने को मिले कि सौभाग्यवान है जो कन्या रत्न की प्राप्ति हुई व यही लड़की मेरे संस्कारों से मेरे परिवार के यश को फैलाएगी।

वीणा स्वामी धर्मपत्नी उम्मेदकुमार स्वामी, हरियासर घड़सोतान

1. धनावंशी स्वामी समाज की प्रगति में नारियों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। प्राचीन भारत में अनेक ऐसे उदाहरण है जिनमें विदूषी नारियों ने समाज निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है और जहाँ नारियों का सम्मान होता है वहाँ सभी कार्य शुभ होते है तथा संस्कारवान नागरिक बनते है।

   धनावंशी स्वामी समाज की समस्त प्रगति में नारी जाति चाहकर भी योगदान नहीं दे रही क्योंकि हमारे समाज में अभी तक ऐसा कोई मंच ही उपलब्ध नहीं है कि सामूहिक रूप से समाज की प्रगति में योगदान दे सके। हालांकि व्यक्तिगत स्तर पर तो सभी नारियां प्रयत्न करती है अपने परिवार में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देकर जैसे अपने बच्चों को उच्च संस्कार देकर।

2. सर्वप्रथम किसी भी समाज की प्रगति हेतु शिक्षित होना आवश्यक है। शिक्षा के बिना उन्नति संभव नहीं है। वर्तमान समाज बालिका शिक्षा पर काफी जोर दे रहा है और हमारे समाज में भी बालिका शिक्षा का स्तर अच्छा हो परन्तु अभी भी

परिवार हो या संगठन, सब में सफलता का राज है-एक दूसरे के विचारों को धैर्य से सुनना, समझना और सम्मान देना।

अभिभावकों में झिझक है कि स्थानीय स्तर पर ही जो शिक्षा का स्तर उपलब्ध है यानि गाँव में यदि 12वीं की स्कूल है तो पढ़ा दिया नहीं तो लगभग हमारे समाज के लोग लड़कियों को अकेले बाहर भेजने में संकोच करते है।

मेरे विचार से नारी जाति को भी लड़के के समान अपना भविष्य बनाने तथा क्षेत्र चुनने में स्वतंत्रता होनी चाहिए।

3. धनावंशी स्वामी समाज में पहली समस्या आजकल यह है कि बेमेले शादियां हो रही है। जिसे अट्टा-सट्टा भी कहते है। यह हमारे समाज में बड़े धड़ल्ले से चल रहा है। इसमें ना तो वर-वधू की उम्र देखी जा रही है और ना ही शिक्षा का स्तर। इससे होता यह है कि चंद महीनों में ही बहुत सी लड़कियों के न चाहते हुए भी सम्बन्ध विच्छेद करना पड़ता है। इस समस्या से बचने हेतु अपने बच्चों को संस्कारवान और इतना योग्य बना देना चाहिए ताकि यह स्थिति ही पैदा ना हो। हमारे समाज में नारियों को शिक्षा के क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से आगे अपना क्षेत्र चुनने की छूट होनी चाहिए क्योंकि कुछ अभिभावक अभी भी रूढ़िवादी विचारधारा के है सो प्रगति में बाधक है।

4. संघो शक्ति कलियुगे, कलियुग में संघ की शक्तिही प्रमुख है। आज के युग में संगठन की अति आवश्यकता है। मेरे मतानुसार अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। हमारे समाज में महिला संगठन से पहले पुरुष संगठन होना अति आवश्यक है। धनावंश समाज में नारी संगठन के लिए एक उच्च स्तर पर संस्था बनाई जाए जो संगठन को सुचारू रूप से चला सके व समाज की प्रगतिशील नारियां संगठित हो सके व समाजसेवा कर सके।

मेरा विचार है कि शिक्षा ही एक ऐसा साधन है जो नारी जाति की प्रगति में सहायक है अत: देश व समाज की प्रगति हेतु बालिका शिक्षा पर जोर देना चाहिए।

चेतना स्वामी, एमएसडी, छापर (सुजानगढ़)

1 10 फीसदी धनावंशी नारी ही समाज की प्रगति मे अपना योगदान देने में समर्थ हो पायी हैं 90 फीसदी नारी अभी भी इससे वंचित हैं, क्योंकि आज भी हमारे धनावंशी समाज में संकीर्ण मानसिकता और रूढ़ विचारधारा जीवित है, जो अपनी बहू बेटियों को नकारात्मक सोच से जकड़े रखती है। शिक्षित और अशिक्षित दोनों को अपनी प्रतिभा और योग्यता से समाज की प्रगति में सहयोग नहीं करने देती, अपितु इसे हस्तक्षेप माना जाता है, उन्हे निश्चित दायरों में ही रखा जाता है।

2 सकारात्मक वातावरण, शिक्षा, पारिवारिक सहयोग, मार्गदर्शन, पारिवारिक समर्थन होना अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यदि परिवार बहू बेटियों को शिक्षा का अवसर देगा, उन्हें एक मार्गदर्शक की भाँति बढावा देकर सकरात्मक वातावरण प्रदान करे तो नारी की उन्नति सम्भव है। यदि तुलनात्मक वातावरण रहता है, जिसमे आधुनिक समय को रूढ़ और पुराने समय से तुलना की जाए और नारी को उससे ही बांध कर रखा जाय तो यह कदापि संभव नहीं है। शिक्षित होकर आत्मनिर्भर बनना आवश्यक है।

3 संकीर्ण मानसिकता सबसे बड़ी समस्या है। जो पुरुष मे ही नहीं बल्कि नारी स्वयं में विद्यमान है, जो उन्हें आगे बढ़ने का अवसर देने की बजाय उन्हें पीछे की ओर धकेल देती है। उन्हें केवल गृहस्थी में उलझाए रखती है उससे बाहर देखने ही नहीं देती जिसमें शिक्षा तो बहुत दूर की बात है।

यदि संकीर्ण मानसिकता को छोड़कर परस्पर सभी एक दूसरे के विचारो को समझे जो सही है, उसको प्रोत्साहन दे बढ़ावा दे, समय के अनुरुप बदलाव लाए तो नारी की समस्या का निवारण प्रारंभ हो सकता है। शिक्षा का तात्पर्य केवल यह नहीं की सेकेंडरी हायरसेकेंडरी, कॉलेज तक की डिग्री हासिल करवा दे, अपितु अर्जित की गयी इन डिग्रियों का लाभ उठाना भी आवश्यक है जो नारी को अपने लिए अपनी प्रतिभा से कुछ करने का अवसर देता है।

4 महिला संगठन की आवश्यकता अत्यधिक महत्वपूर्ण तो नहीं हैं लेकिन होना कोई बुराई भी नहीं है। सामाजिक से अधिक पारिवारिक महिला संगठन आवश्यक हैं. सामाजिक संगठन बनाने से महिलाएं सामाजिक विचारधारा से अवगत होगी कुछ पुरानी विचारधारा मे परिवर्तन भी संभव होगा।

महिलाओं को प्रोत्साहित, प्रेरित करने का एक मंच मिलेगा, उत्सव त्योहार आदि अवसर साथ में मनाने को मिलेंगे- जिससे उनके प्रति उत्साह बढ़ेगा। महिलाओं को आगे बढ़ने और सामाजिक महिलाओं के साथ अपने विचारों को रख कर विचारविमर्श करने का अवसर मिलेगा तथा नारी स्वयं सम्बन्धित समस्याओं को रख कर उन्हे सुलझा सकेगी।

झूठे अहम व जिद की गांठ को खोल दिया जावे, तो उलझे हुए सभी रिश्ते आसानी से सुलझ सकते हैं।

अजूं स्वामी (बी.टेक इंजी.) धर्मपत्नी डॉ. नवीन स्वामी

1. नहीं मैं इस बात से सहमति नही रखती ,क्योंकि समाज की आज जितनी भी प्रगति हो रही है उसमें समाज की नारी भी बराबर की भागीदार है, और समाज का वातावरण कहीं भी नारी को पीछे रखने का नहीं है , वर्तमान परिदृश्य में तो नारी को बराबर का मौका दिया जा रहा है कि वो खुद और समाज दोनों की प्रगति की सोचे। अब यह तो नारी पर ही निर्भर है कि वह अपने व्यक्तित्व का निर्माण किस तरह से करे । वह अगर अपने व्यक्तित्व का विकास करे तो उसे रोकनेवाला कोई नहीं है। धनावंश में भी नारी समाज को अपनी उन्नति के लिए कटिबद्ध होकर काम करना चाहिए।
2. चाहे वो धनावँशी समाज हो या कोई अन्य समाज-उसकी नारी को अगर उन्नति की राह पर लाना है तो सर्वप्रथम प्राथमिकता घर से होनी चाहिए। नारी को घर, समाज, गली ,मोहल्ले ,उसके कार्यस्थल पर बराबरी का दर्जा मिलना जरूरी है। जब नारी को बराबरी का दर्जा मिल जाएगा तो उसे पुरुषों के समान शिक्षा, सम्मान, और अन्य प्राथमिकताऐं स्वत: ही मिल जाएगी। नारी को बराबरी के दर्जे की जिम्मेदारी समाज की भी है। अब वह समय नहीं रह गया है कि वह उन्नति की चाह रखे और उसे आगे बढने के अवसर न दिए जाएं ।
3. धनावँशी समाज मे नारी के विषय मे बात करें तो मुख्य समस्या है नारी को बराबरी का दर्जा ना मिलना, उच्चशिक्षा का कम प्रसार, दहेज उत्पीड़न, आज भी समाज की पँचायत में नारी को नही सम्मिलित करना, समाज मे व्याप्त घूंघट की कुप्रथा। समस्याएं तो अनेक हैं जिनका समाधान समाज को खोजने की जरूरत है। अगर नारी के विषय में कोई उलझन है तो उसका निर्णय करते समय महिला की भागीदारी भी होनी चाहिए। महिलाओं को अपना पक्ष रखने का अवसर ही नहीं दिया जाता। घरों में नारी की पसंद नापसंद को पुरूषों की तरह ही महत्व दिया जाना चाहिए। नारी के विषयों का निर्णय नारी स्वयं करे यह अधिकार मिलना आवश्यक है।
4. धनावँशी समाज मे महिलाओं के एक राष्ट्रीय और राज्यस्तरीय संगठन की बहुत आवश्यकता है जिसमें महिलाओं से सम्बंधित समस्याओं पर विचार हो पाए और उन समस्याओं के सही उपचार के बारे में महिलाओं द्वारा सही कदम भी उठाया जा सके। क्योंकि मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ महिला ही एक स्वस्थ घर और समाज का निर्माण कर पायेगी जो सम्पूर्ण समाज की प्रगति का प्रतीक है। धनावंशी महिला सभा का निर्माण पढी लिखी बहिनों को शीघ्र करना चाहिए और इसके लिए आगे आनी चाहिए ।

कमला स्वामी (एमए, बीएड) पुत्री डॉ. घनश्यामदास स्वामी

1 नारी चाहे और वह ना कर सके ऐसा हो ही नहीं सकता। धनावँशी समाज की प्रगति में नारी जाति अपना योगदान निरंतर दे रही है। क्योंकि नारी माता के रूप में अपने बच्चों को सही एवम अच्छी शिक्षा और उनके चरित्र निर्माण द्वारा समाज की प्रगति में सदैव सहायक बनी है।

2 धनावँशी समाज की नारी की उन्नति के लिए निम्न चीजें प्राथमिकता से होनी चाहिए
1)परिवार का सम्पूर्ण सहयोग।, 2)शिक्षा में बराबरी का दर्जा।
3)पुरूषों के समान परिवार और समाज मे निर्णय लेने की आजादी

3. निम्न प्रमुख समस्याए हैं
1)महिलाओं को पुरुषों की तुलना में शिक्षा में भेदभाव।2) परिवारों में लड़के लड़कियों में भेदभाव
3)महिलाओं के उच्चतम शिक्षित और बराबरी की कामकाजी होते हुए भी दहेज जैसे दंश को झेलना।

4. जी बिल्कुल समाज मे महिलाओं की उच्च भागीदारी के लिए महिला संगठन की सख्त जरूरत है, जो महिलाओं की सभी समस्याओं को सुलझा सके स्वंय महिलाओं द्वारा सँगठित हो सके।

मन और मकान को वक्त-वक्त पर साफ करते रहो, अक्सर मकान में बेमतलब का सामान और मन में बेमतलब की गलतफहमियां हो ही जाती है। दोनों को दूर करना जरुरी है।

सीता स्वामी (एम.ए.डी.) अहमदाबाद

1. धनावँशी स्वामी समाज आज जिस स्तर पर है उसके अनुसार ना तो नारी और ना ही पुरूष समाज की प्रगति में अपना पूरा योगदान दे पा रहे हैं। अपना पेट तो सभी भरते हैं। समाज के प्रति भावना होनी जरूरी होती है,वह कहीं दिखाई नहीं देती है। जहाँ पुरूष खुद समाज के प्रति जागरूकता से परे हैं– वहीं वो नारी को भी समाज उन्नति से दूर रख रहे हैं ।अत: समाज की नारी को पुरुषों की निर्भरता से बाहर निकल कर समाज के उत्थान को आगे बढ़ाना होगा।
2. धनावँशी समाज की नारी को खुद के एवम अपने परिवार और समाज की उन्नति के लिए खुद बीड़ा उठाना होगा और इसके लिए उसे शिक्षा और आत्मनिर्भता को अपना हथियार बनाना होगा। क्योंकि एक शिक्षित और आत्मनिर्भर नारी खुद और समाज दोनों का आत्मविश्वास बढ़ाएगी।
3. धनावँशी समाज मे बहुत सी नारी समस्याएं हैं। नारी का कम उम्र में विवाह, उसे पूर्ण शिक्षा ना मिल पाना, नारी को उच्च शिक्षा से वंचित रखना, दहेज उत्पीड़न , और उसे समाज के निर्माण में भागीदार ना समझा जाना।
4. स्वामी समाज मे गांव की छोटी इकाई से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक के महिला संगठन की बहुत जरूरत है जो नारी की समस्याओं को उठा सके। जिसे समाज की नारियों द्वारा चलाया जाए और सभी समाज की नारियों को उनके हक और सम्मान की लड़ायी को लड़ना सिखाये।

डॉ. उमेश स्वामी, अध्यापिका कोटा

1. उक्त विचार कटु होते हुए भी पूर्णत: सत्य है। यह हमारे समाज की सत्यता है कि धनावंशी महिलाएं ज्ञान व बौद्धिकता में उच्च होते हुए भी समाज में अपने विचारों व कर्मों से योगदान देने में असमर्थ दिखाई देती है। क्योंकि समाज में योगदान हेतु प्रथम सीढ़ी विचारों की अभिव्यक्ति का ही अभाव है। महिला जब अपने विचारों को बतलाने, विषय पर चिंतन व विचार विमर्श करने, मन की प्रेरणा को बतलाने में एक स्वतंत्र वातावरण महसूस करती है तभी वह अपने अनुभवों व विचारों को स्पष्ट कर पाती है लेकिन समाज में व्याप्त कुछ कुरीतियां, संकीर्ण सोच, पारिवारिक रिवाज आदि उस स्वतंत्र वातावरण को बनाने में बाधा उत्पन्न कर रहे है जो महिलाओं को सोचने व आगे बढ़ने हेतु प्रेरित करते है। समाज में व्याप्त इस नकारात्मक वातावरण को महिला व पुरुष वर्ग को मिलकर परिवर्तन लाना आवश्यक है जिससे एक सकारात्मक वातावरण समाज में बन सके जो कि परिवार व समाज के विकास में आवश्यक है।
2. परिवार समाज की पहली इकाई होती है। जब परिवार का सहयोग मिलता है तब समाज का सहयोग स्वत: ही प्राप्त हो जाता है। महिला अपने जीवन में दो परिवारों से जुड़ी हुई होती है नारी उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि ये दोनों परिवार उसे स्वतंत्र वातावरण शिक्षा, अभेदभावपूर्ण माहौल प्रदान करे।
   सकारात्मक वातावरण, विचार व्यक्त करने का आत्मविश्वास, सहयोगपूर्ण वातावरण, अभेदभावपूर्ण व्यवहार, नवपीढ़ी के विचारों का सम्मान, योग्यताओं को अवसर प्रदान करना आवश्यक है ये प्रयास नारी को उसमें विद्यमान ज्ञान, कौशल, बुद्धि, सृजनात्मकता को समाज के लिए विकासात्मक कार्य करने हेतु प्रेरित करेगी।
3. शिक्षित व अशिक्षित का भेदभाव, नारी को पुरुष से कम समझना, नारी गृहकार्य तक सीमित रखना, शिक्षित व सफल होते हुए भी महिला को सामाजिक कार्यों में कुछ करने का अवसर प्रदान नहीं करना, संकीर्ण दृष्टिकोण नकारात्मक वातावरण, तुलनात्मक विचारधारा, नवपीढ़ी नारी के विचारों के साथ पूर्व पीढ़ी के साथ असामंजस्य सर्वदा पुराने रिवाजों व विचारों को श्रेष्ठ समझने की भावना, ये संकीर्ण मानसिकता की विचारधारा है जो न केवल पुरुष वर्ग में बल्कि स्वयं महिला में भी विद्यमान है जो उसे न केवल आगे बढ़ने से रोकती है बल्कि मानसिक विकास में बाधक है ये विचार उसके मस्तिष्क को सीमित सोच के दायरे में बांधे रखते है। इन सम्पूर्ण समस्याओं के प्रति महिला स्वयं जागरूक, स्वतंत्र विचार व सार्वभौमिक दृष्टिकोण अपनाएगी व पुरुष वर्ग इसमें उनका सहयोग कर संकीर्णता के दायरे को समाप्त कर पुरुष व महिला वर्ग मिलकर सकारात्मक व स्वतंत्र वातावरण समाज में बना सके।
4. हमारे समाज में महिला संगठनों की आवश्यकता समाज की ज्ञान, बौद्धिकता व अनुभवों से परिपूर्ण नारी को अपनी योग्यताओं से समाज को अवगत करवाने व समाज हेतु कुछ करने की जिज्ञासा को पूर्ण करने के लिए जरुरी है। ये संगठन महिला को उत्सवों, कार्यक्रमों में मिलने का अवसर देंगे व सामाजिक विचारधाराओं से अवगत करायेंगे। ये संगठन महिला में उत्साह, प्रेरणा, आत्मविश्वास, जिज्ञासा, नवीनता के विचारों में एक जोश व मार्गदर्शन प्रदान करेंगे। प्रारम्भ में छोटे स्तर पर शुरुआत करके इसके पूर्ण लक्ष्य को प्राप्त कर पाना सम्भव है जो आने वाले पीढ़ी की नारी शक्ति को श्रेष्ठ आधारशिला प्रदान कर सके।

वाद-विवाद में इतने ना उलझो कि मूल समस्या ही भूल जायें।

धनावंशी समाज और स्त्रीत्व

सुखदेव स्वामी
कल्याणसर

प्रकृति के नियमानुसार सृष्टि की रचना में जब स्त्री और पुरूष दोनों का समान रूप से योगदान रहा है, तो निस्संदेह एक प्रगतिशील समाज को नारी शक्ति की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। स्त्री और पुरूष परिवार रूपी गाड़ी के दो पहियों के समान है, किसी एक पहिए के सहारे जिस प्रकार से गाड़ी का चलना सम्भव ही नहीं है, चाहे वो कितना भी मजबूत क्यों न हो। उसी प्रकार नारी शक्ति की उपेक्षा करके हम अपने समाज को पूर्णतया विकसित समाज कभी बना ही नहीं पाएंगे क्योंकि समाज की लगभग आधी आबादी नारी शक्ति की है।

आज से दो दशक पहले तक हमारे समाज में नारी वर्ग बड़ा ही उपेक्षित रहा है, नारी वर्ग ने अनेक प्रकार के जुल्मों को सहा है। इसके पीछे कारण न जाने क्या रहे होंगे? लेकिन हमेशा से ही पुरूष वर्ग द्वारा नारी वर्ग को अपने अधिकारों तले ही समझा गया है। परिवार के वरिष्ठ पुरूष वर्ग द्वारा अपने परिवार की बेटियों के रिश्ते उनकी बिना किसी प्रकार की सहमति के तय कर दिये जाते थे। हालांकि उस प्रकार से किए गए लगभग सत्तर प्रतिशत रिश्तों में तो दोनों परिवारों के बीच अच्छा सामंजस्य बना रहता था। लेकिन कुछ जगहों पर किसी कारणवश शादी के बाद दोनों परिवारों में आपसी सामंजस्य अगर नहीं रह पाता तो, उन रिश्तों को जिन्दगीभर निभाने के लिए हमेशा से ही नारीवर्ग द्वारा बहुत बड़ी सहनशीलता का परिचय दिया गया है। अपने समधियों के साथ आपसी सामंजस्य बिगड़ने के बाद समाज में अपनी आन बनाए रखने के लिए महिला के पीहर पक्ष के वरिष्ठ पुरूष वर्ग द्वारा अपने परिवार की बेटी को हर प्रकार की कुंठा व पीड़ा सहन करने की ही हिदायत दी जाती थी। समाज में रिश्तों को

बरकरार रखने के लिए नारीवर्ग ने हमेशा से ही अपनी खुशियों व अपनी आजादी को कुर्बान कर अवश्य ही समाज पर बड़ा अहसान किया है। हालांकि नारीवर्ग की इस प्रकार की दुर्दशा धनावंश के अलावा और भी समाजों में थी।

पिछले कुछ समय से नारी वर्ग के लिए हमारे समाज के मध्यम और निम्नवर्गीय परिवारों में वातावरण और भी खराब हुआ है। समाजबन्धुओं में आपसी सम्पर्क और मेलजोल कम होने की सजा भी बेटियों को भुगतनी पड़ रही है। बेटों की शादियों के लिए अट्टा-सट्टा करके बेटियों का इस्तेमाल सा होने लगा है। अट्टा-सट्टा को

**हर व्यक्ति को अपनी मर्यादा में रहना चाहिए, चाहे पुरुष हो स्त्री।
मर्यादा की दहलीज के पार परिणाम घातक हो सकती है।**

अगर हम थोड़ा भी विवेक से सोचें तो इसमें हम बेटियों की कद्र मात्र एक वस्तु से अधिक नहीं कर रहे है। जीवन-भर के रिश्तों के लिए हम उन्हीं लोगों के साथ जुड़ने को तैयार हो रहे हैं, जो हमें हमारी बेटी के बदले अपनी बेटी देने को तैयार हो। हमें आपस में एक-दूसरे को जानने में कोई रूचि ही नहीं है। इस तरह के रिश्तों के अच्छे भविष्य की हम कैसे कल्पना कर सकते हैं? इस प्रकार के रिश्तों में नारीवर्ग का सबसे ज्यादा शोषण होता है।

इस प्रकार से शोषित और कुंठित नारी वर्ग किस प्रकार से समाज के विकास में अपना योगदान दे पाये? यह सोचनीय विषय है। नारी शक्ति का अगर हम समाज की उन्नति में योगदान चाहते हैं, तो हमें समाज में नारीवर्ग को कुंठित और शोषित वातावरण से उबारना होगा और सुसंस्कार युक्त स्वतंत्र वातावरण प्रदान करना होगा। उसके लिए जो भी प्रयास करने पड़ें, हमें सर्वप्रथम करने चाहिए।

हमारे छोटे से समाज के लिए यह कोई असम्भव कार्य नहीं है कि हम सब आपस में एक दूसरे को जान न सकें। आपसी जान-पहचान और मेल-जोल बढ़ाने के लिए जो सद्प्रयास किए जा सकते हैं, वो शीघ्रातिशीघ्र किए जाने चाहिए। जब हम सब समाज बन्धु आपस में एक-दूसरे को घनिष्ठता से जानेंगे, तो आपस में अपनत्व का भाव बढ़ेगा। आपसी मेल-जोल और अपनत्व भाव के बढ़ने से हमें आपसी रिश्तों के लिए अट्टा-सट्टा जैसे कुकृत्यों की आवश्यकता नहीं रहेगी।

सामान्यत: पूर्व से आपसी मेल-जोल रहने के बाद जिन परिवारों में आपसी रिश्ते होते हैं, वो रिश्ते शत प्रतिशत सफल रहते हैं, और ऐसे रिश्तों की वजह से आपसी प्रेमभाव भी बढ़ता है और जीवन में आनंद के साथ नई ऊर्जा का संचार होता है। मेल-जोल वाले परिवार की बेटी जब बहू के रूप में घर में आएगी तो नई बहू और परिवार का आपस में अच्छा सामंजस्य बना रहेगा, जिससे परिवार का वातावरण तनावमुक्त रहेगा। इस तनावमुक्त वातावरण का सर्वाधिक फायदा नारीवर्ग को होगा और वो अपनी नव ऊर्जा से परिवार और समाज के विकास में अपना योगदान दे पाएगी।

धनावंश का ज्यादातर विस्तार ग्रामीण क्षेत्रों में है और ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी बालिका शिक्षा के लिए वातावरण पूर्णरूप सकारात्मक न होकर नकारात्मक है। इस प्रकार के नकारात्मक वातावरण की वजह से समाज की कई कुशाग्र बालिकाएं आज भी शिक्षा से वंचित रह रही है। जिससे समाज को एक प्रकार से हानि ही है। समाज में बालिका शिक्षा को बढावा मिले, इस हेतु हर संभव प्रयास करने चाहिए।

जिन गांवों में धनावंशी बालिकाओं को शिक्षा के लिए अच्छा वातावरण दिया जा रहा है, उन गांवों के उदाहरण समाज के सामने पेश किये जाने चाहिए जिससे देश के किसी भी कोने में बसे धनावंशी समाजबन्धुओं को एक विशेष प्रकार का प्रोत्साहन मिलेगा। धनावंश की सफल नारी शक्ति को एक संगठन बनाकर समाज की अपनी छोटी बहिनों को एक दिशा दिखाने का प्रयास करना चाहिए।

बालिका शिक्षा के लिए हर तबके के समाज बन्धुओं को समाज की मुख्य धारा से जोड़ा जाना चाहिए। समाज में बालिका शिक्षा के लिए स्वस्थ प्रतिस्पर्धाओं का आयोजन किया जाना चाहिए।

हालांकि आजकल समाज की बेटियां शिक्षा के क्षेत्र में नित नये कीर्तिमान स्थापित कर समाज को गौरवान्वित करने में किसी भी प्रकार की कसर नहीं छोड़ रही है। लेकिन समाज द्वारा एकजुट होकर किए गए प्रयासों से इस क्षेत्र में और भी अच्छी प्रगति लाई जा सकती है। उपर्युक्त आलेख में किसी प्रकार की कोई त्रुटि रही हो, तो मैं समाज बन्धुओं से माफी चाहता हूं।

लिखें वही जिसके नीचे अपने हस्ताक्षर कर सकें,
सोच वहीं जो बेहिचक बोल सकें और बोले वही जो सुन सकें।

चिन्तन

नारी तू नारायणी

• चेतन स्वामी

हमारे मानव समाज की समुन्नति में पुरुष एवं नारी दोनों का समान योगदान रहा है। किसी भी समाज में नारी के उत्कर्ष को कम करके नहीं आंका जाना चाहिए। भले ही देश-काल परिस्थितिवश समाज के नियम परिवर्तित होते रहे होंगे, पर पुरुष के जीवन में नारी का महत्त्व कभी कम नहीं रहा। वस्तुतः सृष्टि निर्माण में दोनों का महत्त्व रहा है। चूंकि पुरुष को भी जन्म नारी देती है, इसलिए नारी का एक विशेष सम्मानीय दर्जा है।

नारी पुरुष के समानता की बात आधुनिक युग में उठती रही है, पर मेरा मानना है कि नारी के पास जो नारीत्व का स्वरुप है, उसे किसी प्रयास से बदला नहीं जा सकता। नारी को पुरुष नहीं बनाया जा सकता और पुरुष को नारी नहीं। दोनों की शारीरिक संरचना-संघटना विलग है, इसलिए कर्म, चिंतन, स्वभाव में जो पार्थक्य है-वह सदैव बना रहेगा। विधाता ने सृष्टि विधान के अनुसार पुरुष और नारी को जन्म दिया है। आजकल के नारी विमर्श में स्त्रियोचित अधिकारों पर बड़ी बहस होती है। नारी सम्मान तो नारी का हक है, पर नारी को पुरुष स्वरुप में बदलने की कवायद चिंताजनक है। नारी विमर्श में नारी स्वातंत्र्य को अधिक लक्षित किया जाता है। पर नारी स्वातंत्र्य विकृति का सबब न बन जाए और सृष्टि विधान का उल्लंघन कर स्त्री अपनी स्वभाविक मर्यादा-पवित्रता और सम्मान खो दे तो-वह स्वतंत्रता तो कहीं अधिक घातक होती है। नारी पुरुष से अलग है, यह किसी मनुष्य की इच्छा से नहीं है, प्रकृति के विधान से है।

जब हम धनावंशी समाज की नारी की दशा और दिशा पर चिंतन करते है तो पाते हैं कि आज भी यह समाज अधिकांशतया परम्परावादी ही है, इसलिए इस समाज का स्त्री वर्ग परम्परागत आचारों और रुढ़ियों का निर्वहन करने में संलग्न है। धनावंशी नारियां सदाचार संयुक्त और अमुखर हैं। अमुखरता कोई गुण नहीं कहा जा सकता, पर परम्परा से ही वह अपने में मशगूल है। स्त्री चेतना के सम्बन्ध में वह किसी ज्ञान को प्राप्त कर रही है तो उसका जरिया सोशल मीडिया अथवा टीवी है। किन्हीं प्रकार के आन्दोलनों व नारों से अभी तक वह प्रभावित नहीं है।

पाश्चात्य प्रभाव ने विभिन्न तरह की उपेक्षा को जन्म दिया है-उससे परिवार सुसंगठन की भावना का बड़ा नाश हुआ है, घर की कोई बहू पढ़-लिखकर नौकरी करने जाती है तो वह अपने सास-श्वसुर को और यहां तक कि अपने पति को छोटा समझने लगे। नौकरी के अहंकार में और पढ़ाई के हर्ष में अपने कर्त्तव्यों और गुणों को भूलने लगे तो यह स्वार्थीपन है। पढ़ाई और उसके सामर्थ्य से उसे नौकरी जैसा फल प्राप्त हुआ है। उसका वह दुरुपयोग करने लगे। पुत्र के विवाहोपरांत बहु से सुख की कल्पना लिए हुए सास-श्वसुर के सपने मुरझा जाते हैं। शिक्षा उदण्डता का कारण न बने। शिक्षा एकाकी भाव न पैदा करे, पढ़ी-लिखी नारियों में सहज यह भाव देखा गया है कि उन्हें ससुराल के सामूहिक वातावरण में रहना असुविधाजनक लगता है।

शिक्षा से सामर्थ्य आता है-उस सामर्थ्य से वैयक्तित्व भावना पनपना तो पतित होना है। समर्थ व्यक्ति वही है जो अपने सामर्थ्य से किसी असामर्थ्य को दूर करे।

धनावंश की प्रत्येक नारी का स्वभाव धार्मिक हो। क्योंकि यह पंथ ही धार्मिक है। धार्मिकता की यह घुंटी बाल्यकाल से ही छोटे बच्चों को दी जानी चाहिए। यह कार्य घर की औरतें ही सुगमता से कर सकती हैं। बच्चों में धार्मिकता के संस्कार बाल्यकाल से भरने पर आप उसे सुंस्कृत और सुंदर सुस्थिर जीवन दे देंगी। आज धनावंशी बच्चे पंथ के निर्माता भक्त धनाजी कैसे प्रभु भक्त थे, यह बात जान नहीं पाते, क्योंकि माताएं उन्हें इस सम्बन्ध में बताने का प्रयास नहीं करती है। जो परिवार धार्मिकता से हट जाता है वह रुक्ष, हिंसक, अभिमानी, दयाहीनता के दुर्गुणों से सहज ही ग्रसित हो जाता है।

पवित्रता के महत्त्व को कौन नकार सकता है। हजारों वर्षों से इस पवित्रता के गुणगान क्या व्यर्थ ही गाए जाते हैं? ऐसा कौन व्यक्ति है जो अपनी मां-दादी, नानी, मौसी, बुआ को आचारहीन देखना चाहता है। नारी-पवित्रता की शिक्षा शैशवकाल से पाती रही है। स्त्री का पातिव्रत्य ही उसकी पवित्रता है। अपने पति को भगवान मानने वाली नारी एक पति को छोड़कर दूसरे की तरफ कैसे नजर कर सकती है? समाज में अगर फिल्मी नारियों की तरह एक पति को छोड़ा और दूसरे को अपनाया तो पवित्रता कहां रहेगी। अपवित्रता का दंश जीवनभर कचोटता है। यह बात केवल नारियों पर ही नहीं अपितु पुरुषों पर भी लागू होती है। उसके लिए भी एक पत्नीव्रत होना जरुरी है। गृहस्थाश्रम भोग और विलास के लिए नहीं होता। वह कर्त्तव्य कर्म पालन का आधार है।

रिश्तों का क्षेत्रफल भी कितना अजीब है, लोग लम्बाई चौड़ाई तो नापते हैं लेकिन गहराई कोई देखता ही नहीं।

आलेख

स्त्री शक्ति और धनावंश समाज

पुखराज भाम्भू
अध्यापक, राठील

सभी धनावंशी पाठकों को मेरा सादर प्रणाम, जय ठाकुर जी की ।

प्रिय बंधुओं! प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति में स्त्री को एक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। शक्ति के रूप में मां दुर्गा, धन की देवी लक्ष्मी तथा विद्यादायिनी माता सरस्वती स्त्री रूप में ही है। भारतीय दर्शन में स्त्री को पुरुष की अर्द्धांगिनी कहा गया है । स्त्री और पुरुष गृहस्थ जीवन रूपी रथ के दो पहिये है। जब ये दोनों पहिये एक साथ सही ढंग से कार्य करें तभी यह गृहस्थ जीवन रूपी रथ आगे बढता है। हमारे धार्मिक कार्यों में भी स्त्री की उपस्थिति अनिवार्य मानी गयी है। हमारे भारतीय दर्शन में कहा गया है कि- यत्र नार्यस्तु पुज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता ।।

अर्थात् जहां नारियों की पूजा होती है, मान सम्मान होता है वहां पर देवता विचरण करते हैं, वहां पर सदैव सुख-सम्पत्ति रहती हैं । प्राचीन काल में घर के कार्यों और सन्तान के पालन-पोषण की जिम्मेदारी स्त्री की थी और जिविकोपार्जन का कार्य पुरुष का माना जाता था । लेकिन समय के साथ धीरे-धीरे बदलाव हुआ और वर्तमान में स्त्री हर क्षेत्र में पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है।

धनावंश में स्त्रियों की स्थिति अभी भी अच्छी नहीं कही जा सकती है। दहेज प्रथा ,बाल विवाह, पर्दा प्रथा और अशिक्षा जैसी कई चुनौतियां आज भी महिलाओं को आगे बढ़ने से रोकती है। आजकल अमीर लोग एक नई परंपरा की शुरुआत कर रहे हैं। वे लोग दहेज को तो नकार रहे हैं लेकिन बेटी को भेंट देने के नाम पर एफडी करवा रहे हैं। यह समस्या का समाधान नहीं है बल्कि यह तो उस समस्या का परिष्कृत रूप है । वे लोग यह भूल जाते हैं कि दहेज भी बेटी

के नाम पर ही दिया जाता है। सोचिए ,यदि आपने अपनी बेटी के लिए सुयोग्य वर ढूंढा है तो बेटी को धन देने की आवश्यकता कहां है? यदि आप अपनी बेटी को खुश रखना चाहते हो तो वही धन अपनी बेटी की गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा पर खर्च कीजिए ताकि आपकी बेटी खुद अपने पैरों पर खड़ी हो सके।

धनावंश में महिलाओं की शैक्षिक स्थिति पर गौर करें तो दो तरह के पहलू सामने आ रहे हैं। एक तरफ तो लड़कियां ज्यादा पढ़ी लिखी है जिनके लिए पढ़ा लिखा लड़का नहीं मिल रहा है या यूं कहें

जिनकी भाषा में सभ्यता होती है, उनके जीवन में सदैव भव्यता होती है।

कि नौकरी वाला लड़का नहीं मिल रहा है । दूसरी तरफ महिलाओं की सरकारी नौकरियों में भागीदारी देखें तो बहुत कम है। दोनों ही स्थितियों का सही ढंग से विश्लेषण करें तो इनके कारण को खोजा जा सकता है। लड़कियों को हम पढ़ाते तो है लेकिन कॉलेज अधिकतर केवल परीक्षा देने ही भेजते हैं। लड़कों को पढ़ने के लिए घर से बाहर निस्संकोच होकर भेजते हैं लेकिन लड़कियों को घर से बाहर पढ़ने के लिए भेजने पर संदेह उत्पन्न होता है। जो लड़कियां स्कूल लेवल तक अपनी कक्षा में टॉप पर रहती है वे कॉलेज में आकर पिछड़ती जाती है। महिलाओं की शिक्षा पर समाज के दृष्टिकोण का पता इसी से लगाया जा सकता है कि जहां लड़कों के लिए चार-पांच धनावंशी छात्रावास है वही लड़कियों के लिए एक भी नहीं है। यदि लड़कियों को लड़कों के समान अवसर उपलब्ध कराए जाए तो लड़कियां भी लड़कों को बराबर टक्कर दे सकती है और यह समाज की कई महिलाओं ने सिद्ध भी किया है।

धनावंश को आगे बढ़ाने में महिलाएं महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है। बच्चे की पहली गुरु उसकी मां होती है। मां जो संस्कार अपने बच्चे को देती है वह उम्र भर बच्चे को याद रहता है। बच्चे को पालने पहुंचने और अधिक देर तक निकट रहने का सौभाग्य ईश्वर ने मां को ही दिया है। इसलिए यदि महिलाएं अपने बच्चों को अच्छे संस्कार दें ,उन्हें धनावंश की धार्मिक परंपराओं और धनावंश के गौरवपूर्ण इतिहास के बारे में बताएं तो धनावंश अत्यधिक प्रगति कर सकता है। इस बात को मनोवैज्ञानिक भी मानते हैं कि बच्चे को जो कुछ बनना होता है वह प्रथम 5 साल में ही बन जाता है इसलिए बच्चे को शुरू से ही अच्छे संस्कार देकर महिलाएं धनावंश की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है। इसके अलावा महिलाओं को समाज के अन्य कार्यों में भी अपनी भागीदारी निभानी चाहिए। जब तक समाज के समाजिक कार्यों में आधी आबादी की पुरुषों के बराबर भागीदारी नहीं होगी तब तक समाज के आगे बढ़ने की कल्पना नहीं कर सकते हैं। आज समय बदल चुका है। इस दुनिया में वही व्यक्ति चिरंजीवी होता है जो समय के साथ अपने में बदलाव कर लें। जब तेज आंधी आती है तो वहीं पेड़ सुरक्षित रहता है जिसका तना लचीला होता है। यही बात हमारे समाज पर भी लागू होती है। हमें रूढ़िवादिता को त्याग कर महिलाओं की सामाजिक कार्यों में भागीदारी सुनिश्चित करनी चाहिए। धनावंशी महिलाओं का एक संगठन बनाना चाहिए जो महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों का सामाजिक हल निकाले और महिलाओं की बेहतरी के लिए कार्य करें। महिलाएं संगठित होकर समाज की स्त्रियों के प्रति नकारात्मक सोच को बदल सकती है।

पिछले 5-6वर्षों से समाज के सामने एक नई समस्या खड़ी हो गई है- वैवाहिक संबंध का विच्छेद करना। पति पत्नी के जिस संबंध को सात जन्मों का रिश्ता माना जाता है वह 7 महीने भी नहीं निभा पा रहे हैं। अग्नि को साक्षी मानकर दिए गए वचन कोर्ट में जाकर टूट रहे हैं। हमारा समाज किस तरफ जा रहा है? इनमें से अधिकतर केस अट्टा सट्टा विवाह वाले हैं। इस समस्या पर हम सबको विचार करना चाहिए। एक नयी कुरीति को फैलने से पहले ही रोका जाना चाहिए।

नारी का करो सम्मान, तभी बनेगा धनावंश महान ।

***

बहुत अधिक सोचने की बात है कि कोई धनावंशी अगर धनाजी को नहीं मानता है तो अपरोक्ष में वह अपने कुल के उन पूर्वजों को नकार रहा होता है जो धनाजी जैसे भक्त की भक्तिमय प्रेरणा से धनावंशी बना। यह बात अब समझाने की नहीं रही कि धनाजी से अलग धनावंशी का कोई अस्तित्व है। धनाजी को नकारनेवाला अपने ही पंथ की हंसी उड़वाता है और अपने पंथ की पहचान मिटाने का काम करता है।

छोटी सी दुआ.... जिन लम्हों में आप हँसते हैं वो पल कभी ख़त्म ना हो।

धनावंश में नारी की ताकत

यह पूर्ण सत्य नहीं है कि केवल शिक्षित महिलायें ही समाज को आगे बढ़ा रही है। समाज विकास में उन महिलाओं का भी सराहनीय योगदान है जो कम पढ़ी-लिखी है, जो निरक्षर पर मेहनतकश है। आज भी हमारा मुख्य धंधा खेती और पशुपालन है जिसमें महिलाओं की पूरी सक्रियता है।

बृजदास स्वामी

गुसांईसर बड़ा

नारी तू नारायणी और यत्र नार्यस्तु रमन्ते तत्र देवता आदि वेद वाक्य हमारी सनातन संस्कृति के आधार थे, आज भी है। संस्कृति से ही संस्कार और संस्कार अनुरुप आचरण होता है अर्थात् संस्कारवान व्यक्ति सदाचारी ही होता है। उसके विचार हमेशा अच्छे होते है। मैं पूरे विश्व समुदाय की तो नहीं लेकिन हमारे धनावंशी सम्प्रदाय के बारे में कह सकता हूँ कि हमारा समाज नारी जाति के प्रति उपरोक्त संस्कारों को आत्मसात किये हुए है।

किसी भी समाज के विकास और उत्थान में महिलाओं की बराबर की भूमिका होती है जिसके बिना समाजोत्थान सम्भव नहीं। धनावंश में भी महिलायें समाज विकास में पूरा योगदान दे रही हैं। यह पूर्ण सत्य नहीं है कि केवल शिक्षित महिलायें ही समाज को आगे बढ़ा रही है। समाज विकास में उन महिलाओं का भी सराहनीय योगदान है जो कम पढ़ी-लिखी है, जो निरक्षर पर मेहनतकश है। आज भी हमारा मुख्य धंधा खेती और पशुपालन है जिसमें महिलाओं की पूरी सक्रियता है। शिक्षा महत्त्वपूर्ण है परन्तु सबकुछ नहीं। शिक्षित भी बेराजगार है और अशिक्षित हुनरमंद भी है जो अर्थोपार्जन कर रही है।

हमारे समाज में महिलाओं की स्थिति अति उत्तम है वो अपनी मनचाही शिक्षा हासिल कर रही है, मनपसंद व्यवसाय चुन रही है, मन मुताबिक सरकारी नौकरी के लिए प्रयासरत हैं, अपनी पसन्द का जीवनसाथी चुनने का विचार व्यक्त करती हैं और समाज इन विचारों को स्वीकार भी कर रहा है। कुल मिलाकर पहले की अपेक्षा आज की नारी की स्थिति बहुत अच्छी और सम्मानजनक है और आगे भी बेहतर होगी। नारी शक्ति से समाज को यह अपेक्षा है कि वह शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़े, अपना करियर निर्माण करे, पढ़ाई पर भरपूर बल दे। इसमें समाजजनों का पूरा सकारात्मक सहयोग है। अपेक्षा यह भी है कि वह अपने संस्कारों को न छेड़े, अपने सामाजिक मूल्यों के प्रति सजग रहे।

अपेक्षा यह भी कि उच्चतम मुकाम हासिल करके भी जमीन से जुड़ी रहे। कोई युवती हवाई जहाज उड़ा लेती है पर बच्चों का पालन पोषण नहीं कर सकती या कोई उच्च सरकारी पद प्राप्त करने के बाद जरुरत पड़ने पर परिजनों की सेवा या गृहकार्य नहीं कर सकती। अगर आप मन की सरलता और प्रकृति-प्रदत्त गुणों का परित्याग करके कुछ हासिल करती हैं तो उसमें कुछ रिक्तता है। केवल रुपये कमाना ही विकास या तरक्की नहीं है। आर्थिक विकास हो लेकिन नैतिक पतन ना हो।

समाज में नारी की धार्मिक स्थिति एकदम संतोषजनक है, वह स्वच्छ होकर अपने धार्मिक और

प्रेम ने मृत्यु से कहा मुझे सब चाहते हैं और तुझसे नफरत क्यों करते हैं?
मृत्यु ने कहा तू एक छल है और मैं एक सत्य हूँ और सत्य हमेशा कड़वा होता है।

सामाजिक रीति–रिवाज पूर्ण करती है, कोई रोक–टोक नहीं है। अपेक्षाकृत ज्यादा हर्षोल्लापूर्वक अपने लौकाचार करती हैं। पूरी धार्मिक आजादी है।

धनावंशी नारी अपने अस्तित्व के लिए बिलकुल चिन्तनशील नहीं है और उसे चिन्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि उसके अस्तित्व पर कोई जोखिम नहीं है। नारी संगठन के बारे में विचार यह है कि ऐसे किसी संगठन की जरुरत नहीं है, स्त्री अपने आपमें परिपूर्ण है, सक्षम है। धनावंशी नारी का किसी से संघर्ष नहीं तो फिर संगठन क्यों? उस पर कोई दबाव भी नहीं, वह किसी से अलग–थलग नहीं, परतन्त्र भी नहीं। प्रभावित भी नहीं फिर नारी संगठन किसलिए और कुछ नकारात्मक तथ्य है तो नारी संगठित होकर नहीं मिटा सकती। उसके लिए पुरुषों भी अवधारणा पर विचार करना होगा। नारी की मनोस्थित संघर्षमय न होकर शांत और मौलिक होनी चाहिए।

रुढिवादिता के विषय में यह जा सकता है कि धनावंशी नारी और पुरुष दोनों रुढिवाद से प्रताड़ित नहीं, बल्कि इससे ग्रसित है। कोई रुढ़िवादी इन्हें प्रताड़ित नहीं करता वह स्वयं इसके आगोश में है। दूसरी बात कि किसी भी समाज में रुढिवाद और परम्परा में कोई स्पष्ट अन्तर नहीं। इसकी कोई स्पष्ट परिभाषा नहीं। किसी परम्परा को कुछ लोग सनातन मानते हैं तो कुछ लोग रुढ़िवाद। किसी अंधविश्वास को कोई परम्परा नहीं मानता, कोई चमत्कार तो कोई रुढिवाद जैसे विधवा विवाह या नाता प्रथा और अंतराजातीय विवाह हमारी परम्परा नहीं, फिर भी प्रचलित है। ओढावनी और मृत्युभोज परम्परा भी है और रुढिवाद भी। मृत्युभोज को लाग कुरीति या गलत परम्परा मानते है फिर भी सभ्य लोग भी वही काम करते हैं। इसके अलावा दहेज प्रथा और घूंघट जैसी अनेक प्रथाए है जिसे परम्परौ, रिवाज, अंधविश्वास है या रुढिवादिता, यह कहना मुश्किल है।

इसलिए इस विषय को नर–नारी के विवेक और मत पर छोड़ना चाहिए। जैसे बहता पानी अपना रास्ता स्वयं बना लेता है, समय भी बहता हुआ पानी है, वह अपनी सहूलियत के अनुरुप परिवर्तन खुद कर लेगा। समय के साथ कई परम्पराये, कई रुढ़िवादिता, कई अंधविश्वास अतीत की बाते हो गई, कुछ सिमटने के कगार पर है। इसी तरह आगे भी जो समयानुकूल नहीं होगी वो स्वत: किनारे लग जायेगी।

सम्बन्ध विच्छेद या तलाक हमारे समाज में नहीं के बराबर है। अगर है तो वह अपवादस्वरुप है। जो स्वाभाविक है। रात के बिना दिन, बुराई के बिना अच्छाई और अंधेरे बिना उजाले का अस्तित्व कहां होता है। इसलिए आश्वस्त रहें, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा ही होगा। बाकी ठाकुरजी की मर्जी।

होइहि सोई जो राम रचि राखा ....

।।हरि शरणम्।।

***

भगत धनाजी री स्तुति

धनाजी म्हारा भगतां रा सिरमौर।

आप भगति रो अमर च्यानणो, उजाळ्यो च्यारूं ओर।।

सेवा पूजा और बंदगी जिणरो नीं कोई छोर।

सैंदै प्रगट्या भगत मन रीझ्या आप ही नंदकिशोर।।

आतमवासी उभा होग्या हरख्या हिवड़ै रा मोर ।

गाय चराई खेत रुखाळ्यो संशय संको न चोर।।

बीज बांट साधां नै पोख्या होकर आप विभोर ।

बिन बाह्यां ही इसड़ो निपज्यो ज्यांरो छेह न छोर।।

धनावंश री जोत जगाई सिंवरयो सांवरो चितचोर।

जात कड़ूम्बै जाग जगाई राख्यो भगति रो जोर।।

आप करयो उपदेस भलेरो असंग सूं बांधो डोर।

छोड जगत जंजाळ वैरागी लिव राखो ठाकुर ओर।।

चेतन चेत करो जग मांहि महिमा भगत री जोर।

धनावंशी जो धन्य धन्य है उणरै गुरू नहीं और।।

धनाजी म्हारा भगतां रा सिरमौर।।

कुपोषण हर जगह है, कहीं पर आहार कम। कहीं पर संस्कार कम।

आलेख

धनावंश की उन्नति में नारीशक्ति की भूमिका

समाज की उन्नति के लिए आवश्यक आधार स्तम्भ नारी की शिक्षा को बढ़ावा दिया जाये। सरकार की ओर से प्रायोजित योजनाओं सहायता का भरपूर लाभ गरीब एवं पिछड़े तबके की बालिकाओं की प्रतिभा को तराशा जाये जिससे समाज प्रगति कर सके। समाज वहीं उन्नति कर सकता है जहां उस समाज की नारियों को उचित स्थान और सम्मान मिला हो, जहां उसके साथ दोयम दर्जे का व्यवहार नहीं किया जाता हो।

कप्तान (से.नि.) रघुनाथप्रसाद स्वामी

यत्र नार्यास्तु पुज्यन्ते।
रमन्ते तत्र देवता।।

मनु स्मृति की उपर्युक्त पंक्तियां अक्षरश: सत्य है कि वही समाज उन्नति कर सकता है, जहां नारियों का सम्मान किया जाता है। अर्द्ध नारिश्वर की कल्पना भारतीय समाज में प्रारम्भ से रही है, जबकि विश्व आज नारी समानता के मुद्दे उठा रहा है।

उपरोक्त पंक्तियों के अनुसार धनावंश भारतीय समाज का ही हिस्सा है। यहां भी नारी की वही स्थिति और भूमिका रही है जो भारत समाज में नारी की रही है। ऐसे में धनावंश समाज की उन्नति में नारी शक्ति की भूमिका विषय पर विचार रखने से पहले निम्नांकित बिन्दुओं पर विचार करना आवश्यक होगा–

1. धनावंश में नारी की दशा और स्थिति।
2. शैक्षणिक और आर्थिक स्थिति।
3. नारी से अपेक्षाएं।
4. नारी का स्वयं के प्रति नजरिया।
5. रुढ़िवाद से प्रताड़ित नारी।
6. विधवा विवाह और पुनर्विवाह की ढुलमुल नीति।
7. धनावंश समाज में नारी की स्वतंत्रता।
8. धनावंश समाज को नारी संगठन की आवश्यकता।

उपर्युक्त बिन्दुओं को ध्यान में रखकर देखा जाये तो पाया जाता है कि धनावंश समाज प्रारम्भ से ही कृषि प्रधान समाज रहने के कारण नारी की स्थिति पिछड़ी ही रही है। भारतीय स्वतंत्रता के समय राजस्थान में स्त्रियों की शिक्षा का प्रतिशत 1 प्रतिशत से भी कम था। यह भी कह सकते है कि नगण्य था। इससे पता चलता है कि नारी तब भी मध्यकाल की भांति पर्दे की कार और अशिक्षा की बेड़ियों में जकड़ी हुई थी। पहले पिता, फिर पति और बाद में पुत्र की सत्ता के ही अधीन रही है। बाल–विवाह, भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, बाल मजदूरी प्रथा, घरेलु हिंसा जैसी अनेक कुरितियां धनावंशी स्वामी समाज में फैली हुई थी। इसलिए रामचरितमानस की ये पंक्तियां–

ढोल, गंवार, शुद्र, पशु नारी,
सकल ताड़न के अधिकारी।।

हमारे समाज में शब्दश: पालन हो रही थी। नारी ही वह कड़ी रही है जो परिवार के प्रत्येक सदस्य और यहां तक पशुओं और पर्यावरण के मध्य योजक कड़ी बन रही थी। मगर उसके सहयोग और योगदान को न तो धनावंश समाज द्वारा जाना गया और विडम्बना यह भी है कि आज भी हमारी राष्ट्रीय आय में घरेलू कार्यों को नहीं जोड़ा जाता है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सरकार द्वारा अनगिनत योजनाएं चलाई गई जो कुछ हद तक महिलाओं की सामाजिक बेड़िया तोड़ने में मददगार रही लेकिन हमारे समाज धनावंश में अशिक्षा के कारण ऊंट के मुंह में जीरा साबित हुई है। शहरी क्षेत्र में तो फिर हालात इतने खराब नहीं है पर ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति चिन्तनीय है। इसका कारण गांव में पुरुष भी अपनी जिन्दगी का एक मात्र लक्ष्य

रिश्ते तब तक ही मधुर होते है, जब तक उन्हें आजमाने का मौना ना मिला हो।

यही मानता है कि उसे सिर्फ दो वक्त की रोटी का जुगाड़ करना है। हाल में मुख्यमंत्री माननीय श्री अशोक गहलोत राज्य की नई महिला कल्याण नीति की घोषणा की है। इसके लागू होने से इसका लाभ धनावंश समाज की महिलाओं को भी मिलेगा जिससे समाज की उन्नति में सहायक होगा।

नब्बे के दशक के बाद उदारीकरण, बाजारीकरण के प्रभाव और सरकार द्वारा योजनाओं को सख्ती से लागू करने के कारण धनावंशी समाज में लड़कियों की शिक्षा पर ध्यान दिया जाने लगा है। उसी का परिणाम है कि लड़किया खेल में (मंजु बाला स्वामी, गांव चांदकोठी, तहसील राजगढ़, जिला–चूरू) के मैदान से लेकर शिक्षा, राजनीति, चिकित्सा, प्राशसनिक सेवा आदि के क्षेत्र में अपना नाम कमा रही है।

धनावंश समाज के भक्त शिरोमणी धनाजी महाराज स्वयं आजीवन सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ रहे। उस समाज में मातृशक्ति का अहसास कराने को मां दुर्गा को नारी रुप दिया, दुर्गा को देवी माना गया लेकिन औरत को औरत ही रखा गया। इसी कारण हमारे समाज की स्त्रियां आज भी उन ऊंचाइयों को नहीं छू पा रही है। जहां उन्हें पहुंचना चाहिए–

हो गई है पीर पर्वत सी पिघलनी चाहिए।
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।।
आज यह दीवार परदों की तरह हिलने लगी।
शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।।

आर्थिक स्वतंत्रता की बात की जाये तो नारी आज भी आर्थिक रूप से पुरुष पर ही निर्भर है। धनावंशी समाज में ढांचे की बनावट इस तरह बनी हुई है कि आर्थिक रूप से नारी स्वतंत्र होते हुए भी उसके धन पर उसका (नारी का) अधिकार न होकर परिवार के किसी न किसी पुरुष सदस्य का ही है।

भारतीय संविधान में समानता का अधिकार (अनुच्छेद 14) राज्य द्वारा भेदभाव नहीं करने (अनुच्छेद 15), अवसरों की समानता (अनुच्छेद 16) समान कार्य समान वेतन (अनुच्छेद 39), अपमानजनक प्रथाओं के परित्याग के लिए (अनुच्छेद 51 (ए) (ई), प्रसूति सहायता के लिए (अनुच्छेद 42) जैसे अनेक प्रावधान किये है। इसके अलावा अनैतिक व्यापार (निवारण) अधिनियम 1956, दहेज प्रतिषेध अधिनियम 1961, कुटुम्ब न्यायालय अधिनियम 1934, महिलाओं का अशिष्ट रुपण (प्रतिषेध) अधिनियम (1986), सतिनिषेध अधिनियम (1987), राष्ट्रीय महिला अधिनियम (1990), गर्भधारण पूर्व लिंग चयन प्रतिषेध अधिनियम 1994, घरेलु हिंसा से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम 2005, बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम 2006, कार्य स्थल पर महिलाओं को लैगिंग उत्पीड़न (प्रतिषेध) अधिनियम 2013 व दण्डविधि (संशोधन) 2013। भारतीय महिलाओं का अपराधों के विरुद्ध सुरक्षा प्रदान करने तथा उनकी आर्थिक और सामाजिक दशा में सुधार करने के लिए बनाये गये अनेक कानूनी प्रावधान है। इसी तरह धनावंश समाज में भी प्रत्येक नारी को इसकी शिक्षा से अवगत करवाना चाहिए जिससे वे अपने अधिकारों को जान सके। समय पर इन अधिकारों का उपयोग कर सके। राज्य की ग्रामीण और नगर पंचायतों में महिलाओं के लिए आरक्षित सीटों का प्रावधान भी महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण की ओर एक कदम है।

सरकार द्वारा महिलाओं की विभिन्न योजनाओं को लागू किया गया है, जिससे हमारे समाज की महिलाओं को भी लाभ मिलेगा–

1. महिला विकास कार्यक्रम
2. स्वावलम्बन योजना
3. सामूहिक विवाहों हेतु अनुदान
4. जिला महिला सहायता समिति
5. राज्य महिला आयोग
6. जेण्डर संवेदन शील बजटिंग
7. किशोरी शक्ति योजना
8. घरेलु हिंसा से महिला संरक्षण अधिनियम 2005
9. बाल विवाह रोकथाम
10. बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओ योजना आदि

इस प्रकार की योजनाएं है जिनके बारे में महिलाओं को जागरुक किया जाये तो समाज को बहुत लाभ मिलेगा। समाज की और उन्नति में और योगदान मिलेगा। इतने सारे कानूनों और नियमों के बावजूद भी हमारे धनावंशी समाज की नारी इन्हें प्राप्त करने से वंचित है कारण वही ढाक के तीन पात, क्योंकि समाज में आज भी अशिक्षा, गरीबी, पर्दा पर्था, पुरुष मानसिकता आदि। जबकि आज 21वीं सदी की ओर अग्रसर है, फिर भी हमारे समाज में आज भी नारी से यह अपेक्षा की जाती है कि वह सभी का ध्यान रखे। परिवार, खेत

सब्र और सहनशीलता कोई कमजोरियां नहीं है, यह तो अंदरूनी ताकत होती है जो सब में नहीं होती।

खलिहान, पशु और सन्ताने आदि सब वही संभाले। पढ़ लिखकर नौकरी करने वाली महिलाओं का चुल्हा चौका स्वयं को संभालना होता है। प्रारम्भ से ही ऐसी मानसिकता वाले माहौल में रहने के कारण महिलाओं का स्वयं और अन्य महिलाओं के प्रति भी यही नजरिया रहता है कि सभी काम उनकी जिम्मेदारी है। इन सब का कारण समाज की रूढ़िवाद सोच है। जो धनावंशी समाज की महिलाओं की उन्नति में बाधक बन रही है। लड़कियों को बचपन से यही सिखाया जाता है कि वह चुप रहे, सहन करना सीखे यह उसका संस्कार है। यदि वह पिता के घर अपना अधिकार मांगती है तो वह बागी बन जाती है और पति के घर अगर हक जताती है या स्वतंत्रता की मांग करती है तो कुल्टा कहलाती है।

चुटकी भर सिन्दुर पड़ते ही कसके बांध दी जाती है,
जुलफों वाली लड़की एक बेबस, लाचार, बेवकूफ सी औरत जुड़े में।

हमारे समाज की एक बड़ी विडम्बना रही है और वह हमारा वैवाहिक ढांचा। हमारे समाज की विधवा और परित्यक्ता पका कोई स्थान नहीं है। सती प्रथा जैसी अमानवीय प्रथाओं के कारण विधवा विवाह रेगिस्तान में जल खोजने जैसा रहा है। आज आजादी के 70 साल बाद भी धनावंशी स्वामी समाज में विधवाओं की स्थिति दयनीय है। शहरों में कुछेक उदाहरणों को छोड़ दिया जाये तो गांवों की दशा सोचनीय है। आज हमारे समाज में पुरुषों के इतने संगठन और सम्मेलन के बावजूद विधवा विवाह और परित्याक्ता पुनर्विवाह पर कोई एक राय नहीं है। जहां समाज का शिक्षित वर्ग इसके पक्ष में है वही ग्रामीण और रुढिवादी सोच वाले समाज के तथाकथित पंच आज भी विधवाओं और परित्याक्ताओं को नारकीय जीवन जीने पर मजबूर करते है। समाज के महानुभावों को यह पता नहीं है कि अपमान न करना नारियों का, इनके बल पर जग चलता है।

पुरुष जन्म लेकर तो इन्हीं की गोद में पलता है,
दिन की रोशनी ख्वाबों को बनाने में गुजर गई,
रात की नींद बच्चों को सुलाने में गुजर गई।
जिस घर में मेरे नाम की तख्ती भी नहीं,
सारी उम्र उस घर को सजाने में गुजर गई।।

अत: आज के दौर में आवश्यकता है अन्य समाजों की भांति धनावंश समाज भी सम्मानजनक जीवन जीने का अधिकार दे और विधवा एवं परित्यक्ता को पुनर्विवाह की सहर्ष स्वीकृति दी जाएं। साथ ही समाज से दहेज प्रथा एवं मृत्युभोज जैसी कुरीतियों को मिटाकर सामूहिक विवाह एक रुपया नारियल शगुन को लेकर विवाह को बढ़ावा दिया जाये। इससे होने वाली बचत से समाज में शिक्षा को बढ़ावा दिया जाये। यदि समाज के शीर्ष लोग इस ओर ध्यान देंगे तो अन्य वर्ग भी इसे अपनायेगा।

वर्तमान समय का तकाजा है कि धनावंशी समाज की नारी को अपने अधिकारों के प्रति जागरुक किया जाये। नारी को सामाजिक, आर्थिक और मानसिक स्वतंत्रता दी जाये, नारियों की उन्नति के लिए नारी संगठन की आवश्यकता है। जहां समाज की पिछड़ी महिलाओं और बच्चियों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक बनाया जाये। समाज का एक आदमी पढ़ाने से एक व्यक्ति शिक्षित होगा और एक स्त्री को पढ़ाने से पूरा परिवार शिक्षित होगा।

पीड़ित, प्रताड़ित और शोषित महिलाओं को उनका सम्मान लौटाया जाये। आज जमाना चांद पर पहुंच गया है और हम वहीं 18वीं सदी की मध्य युगीन सोच लिए बैठे है। अत: जरुरत है उस सामन्ती सोच को बदलने की तथा जमाने के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने की। जिससे धनावंश समाज को एक नई दिशा मिल सके। धनावंश समाज की उन्नति के लिए आवश्यक आधार स्तम्भ नारी की शिक्षा को बढ़ावा दिया जाये। सरकार की ओर से प्रायोजित योजनाओं की सहायता से भरपूर लाभ गरीब एवं पिछड़े तबके की बालिकाओं की प्रतिभा को तराशा जाये जिससे समाज प्रगति कर सके। समाज वहीं उन्नति कर सकता है जहां उस समाज की नारियों को उचित स्थान और सम्मान मिला हो, जहां उसके साथ दोयम दर्जे का व्यवहार नहीं किया जाता हो।

आज आवश्यकता है कि धनावंश समाज का शिक्षित वर्ग विचार करें कि नारी की उन्नति के लिए, महिला शिक्षा के लिए अन्य समाज की भांति छात्रावासों की व्यवस्था की जावे। समाज की प्रतिभाओं के सम्मान समारोह आयोजित किये जाये। समाज के विकास के लिए नियमित सम्मेलन किया जाये जहां महिलाओं को भी शामिल किया जाये। अत: धनावंश की उन्नति में नारी शक्ति को कम नहीं आंका जा सकता है।

नारी ही शक्ति है नर की,
नारी ही शोभा है घर की,
जो उसे उचित सम्मान मिले,
समाज को उन्नति की राह मिले।

निष्कर्ष के रूप में यही कहा जा सकता है कि धनावंश की उन्नति में नारी को सशक्त भूमिका प्राप्ति के लिए अभी मीलों चलना बाकी है।

बोलने का हक छीना जा सकता है, मगर खामोशी का कभी नहीं।

आपके पत्र-आपकी भावनाएं

श्री धनावंशी हित धनावंशी चेतना की मासिक पत्रिका का अंक 4 कल प्राप्त हुआ, जिसमें धनावंशी विद्वानों के द्वारा समाज के लिए बताएं गए विचारों को मैंने बहुत बारीकी से पढ़ा व पढ़कर बहुत प्रसन्नता हुई आप सब के विचार जिनमें परिव्राजक संत श्री सीताराम दास जी गुस्साईसर, डॉक्टर घनश्यामदासजी, स्वामी नोखा वैद्य अर्जुन दास जी स्वामी हरियासरए बस्तीरामजी स्वामी मेड़ता सिटी, रघुवीर आनंद जी स्वामी अहमदाबाद। राधेश्याम जी स्वामी नागौर सांवरमल जी, स्वामी आबसर व पुख राज जी भांबू राठिल, आप सभी के विचार पढ़कर ऐसा लगा की सामाजिक पुनर्निर्माण की दिशा में हमारी धनावंशी हित पत्रिका बहुत ही कारगर साबित हो रही है। इसके अलावा डॉक्टर चेतन दास जी स्वामी द्वारा लिखा गया लेख धनावश को जरूरत आध्यात्मिक पुरुष की ये उनका लेख बहुत अच्छा लगा और वर्तमान में आज समाज को ऐसे आध्यात्मिक पुरुष की जरूरत है साहित्यिक सेवाओं के लिए डॉक्टर शैलेन्द्र जी स्वामी जोधपुर को सम्मान व सौरभ जी स्वामी के शिक्षा निदेशक बनने पर समाज को बहुत गर्व है व उन दोनों को मेरी तरफ से बहुत बहुत हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं तथा धनावंशी समाज सूरत में देविदतजी स्वामी द्वारा की गई पहल धनावंशी प्रतिज्ञा – इतना लो थाली में – व्यर्थ ना जाए नाली में व रघुनाथ प्रसाद जी स्वामी डीडवाना द्वारा मृत्यु भोज जैसी सामाजिक कुरीति पर रचित कविता भी बहुत अच्छी लगी.

-छगन स्वामी, पाली

Today Dhanavanshi Hit Patrika received. A nice Front page ram hanuman Milan a powerful seen jai siyaram jai Hanumanji alls groups members tks with welcome and regards jai siyaram ji

-Premdas Beniwal, Dotina

आज पत्रिका प्राप्त हुई, पढ़कर खुशी हुई। मुख्य पेज पर रामजी हनुमानजी की तस्वीर देखकर बहुत खुशी हुई। जय श्री राम

-भींवदास स्वामी, डीडवाना

श्री धना वंशी हित पत्रिका का चौथा अंक प्राप्त हुआ इसमें धना वंश के महत्वपूर्ण प्रश्नों पर परिचर्चा में भाग लेने वाले समाज के शिक्षित विद्वान जन, संत श्री सीताराम दास जी, डॉक्टर घनश्याम दास स्वामी, वेद अर्जनदास स्वामी, श्री बस्तीराम जी स्वामी, रघुवीर आनंद स्वामी श्री राधेश्याम जी स्वामी, सांवरमल जी स्वामी, पुखराज जी स्वामी, छगन

सम्पत्ति के उत्तराधिकारी एक से ज्यादा हो सकते है, लेकिन कर्म के उत्तराधिकारी आप स्वयं ही होते है।

दास जी स्वामी इन सभी विद्वान जन समाज बंधुओं ने बहुत ही समाज हितेषी विचार व्यक्त किए जो मुझे बहुत अच्छे लगे। सभी विद्वान जनों को तहे दिल से धन्यवाद। डीडवाना निवासी मेरे सगा जी श्री रघुनाथ प्रसाद जी के द्वारा मृत्यु भोज पर लिखी कविता गुरुदेव धन्ना जी महाराज की महिमा धन्ना वंशी स्वामी की मूल पहचान की बातें बहुत अच्छी लगी सगा जी को तहे दिल से धन्यवाद, शिक्षित बनो चेतो रखो एको रखो संघे शक्ति कलियुगे।

-प्रेमदास स्वामी, खींयाला

श्री धन्ना वंशी पत्रिका का आज चौथा अंक प्राप्त हुआ पढ़कर हृदय प्रसन्न हुआ यह पत्रिका समाज को जोड़ने में व पंथ प्रवर्तक श्री धनाजी महाराज की जानकारी के लिए बहुत ही अच्छी समाज की पत्रिका है डॉ चेतन जी स्वामी का आभार व धन्यवाद। मैंने कभी किसी भी अखबार व अन्य पुस्तक के लिए कभी भी कुछ लेखन नहीं किया लेकिन डॉक्टर साहब की प्रेरणा से मेरा भी इस अंक में एक लेख छपा जो बहुत ही अच्छा लगा डॉक्टर साहब समाज में जो एक जागृति ला रहे हैं बहुत ही अच्छा लग रहा है।

-बस्तीराम स्वामी, मेड़ता सीटी

बस्तीराम जी जय ठाकुर जी की सा आदरणीय डॉक्टर श्री चेतन दास जी स्वामी ने अज्ञान रूपी कुंभकर्ण की निद्रा में सोए हुए धना वंशी स्वामी समाज को जागृत करने का संकल्प लिया है इस समाज हितेषी कार्य के लिए उनको जितना भी धन्यवाद दिया जाए कम है मैं श्री चेतन दास जी व उनको सहयोग करने वाले सभी समाज बंधुओं को तहे दिल से धन्यवाद देता हूं.

-रघुवीर आनन्द, अहमदाबाद

आदरणीय जय ठाकुर जी की, इस प्रतिस्पर्धा के युग में धन्ना वंशी स्वामी समाज को अग्रिम पंक्ति में खड़ा करने के लिए आपने धन्ना वंशी नारियों से सहयोग की अपील की यह बहुत ही अच्छी पहल है इतिहास गवाह है स्त्री जाति का हर क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ योगदान रहा है मुझे पूर्ण विश्वास है हमारी माताएं बहने पुत्रियां समाज उत्थान कार्य में अपना सर्वोच्च योगदान देगी मैं नारी शक्ति को नमन करता हूं.

-भंवरलाल वैष्णव, जयपुर

धनावंशी हित पत्रिका का चौथा अंक मिला अच्छा लगा / धनावंशी विशिष्ट जनो के विचार अति उत्तम लगे धनावंशी उथान के लिए शिक्षाविद एवं युवाओं को अग्रसर होना अति आवश्यक है धनावंश का इतिहास व्यवस्थित प्रमाणिक रूप से लिखा जाना आवश्यक है तभी लोगों को समझ मे आयेगा कि हम धनावंशी है कोई भी सिद्धांत नियम तभी बनता है जब तथ्यों को परीक्षणों द्वारा सत्य साबित किया जाता हैं विचारों को व्यवहारिक रूप दिया जाना आवश्यक है तभी समाज का उत्थान सम्भव है भावनात्मक जागृति लानी .

-मांगीलाल स्वामी, सींथल

गलत व्यक्तियों का चयन हमारे जीवन को प्रभावित करे या न करें, लेकिन एक सही व्यक्ति की उपेक्षा, हमें जीवन भर पछताने पर मजबूर कर सकती है।

श्री धनावंश हित में विज्ञापन सहयोग करने वाले धनावंशी बंधु

1. श्री रामचंद्र स्वामी, स्वामियों की ढाणी
2. श्री रघुवीर आनन्द स्वामी, अहमदाबाद
3. श्री सुखदेव स्वामी, अहमदाबाद
4. श्री लक्ष्मणप्रसाद स्वामी, पलसाना
5. श्री पदमदास स्वामी, बीदासर
6. श्री गोपालदास स्वामी, पालास
7. श्री गोविन्द स्वामी, हैदराबाद
8. श्री श्रवणकुमार बुगालिया, दिल्ली
9. श्री भागीरथ बुगालिया, दिल्ली
10. श्री गोपालदास महावीर स्वामी, थावरिया
11. श्री बृजदास स्वामी पुत्र श्री सीतारामदास परिव्राजक, सूरत
12. श्री ओमप्रकाश स्वामी, पाली
13. डॉ. घनश्यामदास, नोखा
14. श्री मनोहर स्वामी, अजीतगढ़
15. श्री गुलाबदास स्वामी, जोधपुर
16. श्री बनवारी स्वामी, स्वामियों की ढाणी
17. श्री त्रिलोक वैष्णव, जोधपुर

उपरोक्त सभी धनावंशी बंधुओं का आभार। अन्य जनों से भी निवेदन है कि इस पत्रिका के सुचारु प्रकाशन हेतु अपना विज्ञापन सहयोग प्रदान कर कृतार्थ करें।–प्रकाशक

पत्रिका के विशिष्ट सहयोगी

सांवरमल स्वामी, आबसर
अर्जुनदास स्वामी, हरियासर
देवदत्त स्वामी, सूरत
लालचन्द स्वामी, धोलिया
बजरंगलाल स्वामी, लालगढ़
प्रेमदास स्वामी, खिंयाला

श्री धनावंशी हित

यह पत्रिका धनावंशी समाज की एकमात्र पत्रिका है। कृपया इसके प्रचार–प्रसार में अपना योगदान प्रदान करें।

- पत्रिका में विज्ञापन, बधाई संदेश, सूचना, समाचार तथा रचनाएं भिजवाकर अनुगृहीत करें।
- यह अंक आपको कैसा लगा? अपनी राय से अवगत करवायें।
- पत्रिका का सालाना शुल्क 200/– रुपये है। कृपया सदस्य बने।
- **पता–श्री धनावंशी हित, धनावंशी प्रकाशन, कालू बास, श्रीडूंगरगढ़–331803 (बीकानेर) * मो.: 9461037562**

संत शंकरदासजी स्वामी का देहवसान

पालास। धार्मिक प्रवृत्ति एवं समाज की जाने–माने संत शंकरदासजी स्वामी का गत 17 मार्च को रात्री 11 बजे देहावसान हो गया। उनकी देर रात्री ह्रदयाघात से मृत्यु हो गई। ग्रामवासियों ने इस पर शोक जताया एवं बताया कि वे समाज के मित्रा, शुभचिंतक एवं सच्चे धरोहर थे। उनके सेवाकार्य हमेशा हमें प्रेरित करते रहेंगे।

धनावंशी स्वामी की मूल पहचान क्या है?

वह विनम्र, संयमी, चरित्रवान और
सच्चा तथा संस्कारी हो ।
सदैव भक्ति के भावों से अनुप्राणित होकर,
प्रभु भक्ति में लीन रहे ।
किसी भी प्रकार का व्यसन न हो ।
जीवन में सरलता और सादगी हो,
दिखावे से कोसों दूर हो ।
मिथ्याचारी न हो ।
हर धनावंशी उपरोक्त गुणों से संवलित होना चाहिए ।

सदस्यता शुल्क एवं अन्य भुगतान निम्न खाते में करें।

Dhanavanshi Prakashan
A/c No. - 38917623537
Bank - State Bank of India
Branch - Sridungargarh
IFSC code - SBIN0031141

रिश्तों का क्षेत्रफल भी कितना अजीब है, लोग लम्बाई चौड़ाई तो नापते हैं, लेकिन गहराई कोई देखता ही नहीं।

श्री धनावंशी हित के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

त्रिलोक वैष्णव

M.: 9414130595, 9982630595

SUNCITY LANDMARK & CO.

72, Keshav Nagar, Opp. Ashok Udhyan, Pal Road
Jodhpur-342008 (Raj.)
Email : trilokvaishnava@yahoo.co.in

स्थाई निवास

त्रिलोक वैष्णव पुत्र स्व. श्री मोहनदासजी वैष्णव (फागणिया)

91, केशव नगर, स्ट्रीट नंबर 4, पाल रोड, जोधपुर, राजस्थान-342008

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

स्व. हनुमानदासजी बुगालिया
एवं श्रीमती मनोहरीदेवी
बुगालिया का शुभाशीष

भागीरथदास स्वामी
M.: 9310045994

प्रेमदास स्वामी
M.: 9873345994

रामचन्द्र स्वामी
M.: 9811844777

सांवरमल स्वामी
M.: 9350822501

Cotton Line Fashion
Gandhinagar, Delhi

Life Time Fashion
Gandhinagar, Delhi

Rajdhani Sales
Gandhinagar, Delhi

S.M. Garments
Karawal Nagar, Delhi

गांव सारंगसर, पोस्ट लुहारा, तहसील-बीदासर (चूरू) राज.

If Undelivered Return To
सम्पादक : श्री धनावंशी हित
धनावंशी प्रकाशन
कालू बास, पोस्ट : श्रीडूंगरगढ़-331803
जिला-बीकानेर (राज.) मो.: 9461037562

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, सम्पादक चेतन स्वामी द्वारा धनावंशी प्रकाशन, कालू बास, श्रीडूंगरगढ़ द्वारा प्रकाशित एवं महर्षि प्रिण्टर्स, श्रीडूंगरगढ़ द्वारा मुद्रित ।